इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 130

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मादक द्रव्य दुरुपयोग पर तथ्यपरक सूचना 1

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 129

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम

खंड

1

मादक द्रव्य दुरुपयोग पर तथ्यपरक सूचना

इकाई 1

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच.आई.वी./एड्स की प्रासंगिकता

इकाई 2

सामान्यतः प्रयोग वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूह

इकाई 3

भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार का विस्तार

इकाई 4

मादक द्रव्य परिदृश्य–वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय

विशेषज्ञ समिति (मूल)

प्रो. पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क, इंदौर

डॉ. रमा वी. बारू
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (मूल)

सहयोगदाता

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

प्रोफेसर आर.एम. कालरा

डॉ. संतोष कुमार

प्रोफेसर जे. दिनकर लाल

खंड सम्पादक एवं पाठ्यक्रम संयोजक

प्रोफेसर ग्रेशियस थॉमस
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

संशोधन

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

मूल सहयोगदाता

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

प्रोफेसर आर.एम. कालरा

डॉ. संतोष कुमार

प्रोफेसर जे. दिनकर लाल

विषय सम्पादक

डॉ. शीबा जोसेफ,
भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइसेंस,
भोपाल

पाठ्यक्रम एवं खंड संयोजक

डॉ.सायन्तनी गुइन,
समाज कार्य विद्यापीठ,

इग्नू, नई दिल्ली

मुद्रण प्रस्तुति

अक्टूबर, 2022

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2022

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

पाठ्यक्रम परिचय

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। इस पाठ्यक्रम में चार खंड हैं। खंड एक 'मादक द्रव्य दुरुपयोग पर तथ्यात्मक सूचना' के बारे में है। यह खंड मादक द्रव्य दुरुपयोग की प्रसंगिकता और एच.आई.वी./एड्स और आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले द्रव्यों और लक्ष्य समूहों का वर्णन करता है। आगे यह खंड भारत में मादक द्रव्य दुरूपयोग की प्रासंगिकता तथा मानव तस्करी पर चर्चा करता है। यह खंड मादक द्रव्य दुरूपयोग के वैश्विक क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिदृश्य की व्यापक समझ प्रदान करता है।

खंड दो 'मादक द्रव्य दुरूपयोग और उसके परिणाम' के विषय में है। इस खंड में अल्कोहल, ड्रग्स, एस आई टी के बी के सम्बन्ध तथा वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता को बताया गया है। यह खंड परिवार तथा राष्ट्रीय विकास पर मादक द्रव्यों के दुरूपयोग का भी वर्णन करता है। इस खंड में नारकोटिक ड्रग एन्ड साइकोट्रोफिक सब्सटेन्स एक्ट 1985 (एन डी पी एस एक्ट, 1985) की भी विवेचना की गयी है। यह खंड मादक द्रव्य दुरूपयोग की मांग में कमी की आवश्यकता और रणनीतियों को भी रेखांकित करता है।

खंड तीन 'शराब और मादक द्रव्य निर्भरता की रोकथाम और उपचार' के विषय में है। इस खंड में शराब तथा मादक द्रव्यों के सेवन पर निर्भरता तथा शिक्षा, परामर्श, रेफरल सेवाओं और समुदाय प्रतिक्रियाओं के माध्यम से सशक्तीकरण के बारे में वर्णन करता है। इस खंड में एन जी ओ की भूमिका, मादक द्रव्य दुरूपयोग का निवारण और नियंत्रण हेतु अर्न्तराष्ट्रीय निकायों की भी व्याख्या करता है। इस खंड में, हमने मादक द्रव्य सेवन से सम्बन्धित अन्तःक्षेप रणनीतियों हेतु कौशलों तथा दक्षताओं के बारे में भी वर्णन किया है।

खण्ड 4 'एच आई वी तथा पारिवारिक विषयों' में परामर्श के बारे में है। यह खण्ड एच आई वी और एस आई टी से सम्बन्धित परामर्श रणनीतियों का वर्णन करता है। यह परिवार तथा विवाह पूर्व परामर्श की भी विवेचना करता है। भारत में परामर्श सेवाओं के विद्यमान रूझानों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गयी है।

यह पाठ्यक्रम आपको मादक द्रव्य सेवन की रोकथाम से जुड़े विभिन्न मुद्दों की व्यापक समझ प्रदान करेगा।

खंड 1 का परिचय

''मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम' पर आधारित पाठ्यक्रम के खंड 1 को आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। मादक द्रव्य दुरुपयोग पाठ्यक्रम का यह परिचयात्मक खंड है। इसमें मादक द्रव्य व्यसन और एच.आई.वी. संचारण में संबंधों की समीक्षा की जाएगी। इस खंड में मादक द्रव्य व्यसन की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य की भी समीक्षा की जाएगी।

इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। **इकाई 1** "मादक द्रव्य दुरुपयोग और एचआईवी/एड्स की प्रासंगिकता की समीक्षा करती है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप यह समझ जाएँगे कि किस प्रकार से मादक द्रव्य दुरुपयोग एच.आई.वी. संक्रमण के अवसरों को बढ़ा देते हैं तथा आप यह स्पष्ट कर सकेंगे कि लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं। **इकाई 2** सामान्य उपयोग वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूहों का वर्णन करती है। इस इकाई में लोग मादक द्रव्य का क्यों दुरुपयोग करते हैं के वर्णन के साथ मादक द्रव्य का दुरुपयोग करने वाले संभावित विभिन्न समूहों का वर्गीकरण भी किया गया है। **इकाई 3** में ''भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार का विस्तार'' का वर्णन किया गया है। इस इकाई में मादक द्रव्य दुरुपयोग का विभिन्न समूहों पर भाव, मादक द्रव्य के अवैध व्यापार की व्यापकता और क्षेत्र तथा अवैध व्यापार के परिणामों की चर्चा की गई है। **इकाई 4** मादक द्रव्य के सार्वभौमिक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिदृश्य के बारे में वर्णन करती है। यह इकाई मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित समस्या की व्यापकता को प्रस्तुत करती है क्योंकि यह सामान्यतः पूरे विश्व में तथा भारत में विशेष रूप से विद्यमान है।

यह खंड आपको मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या, एचआईवी/एड्स के संचारण की प्रासंगिकता के साथ–साथ भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में मौजूद नशीली दवाओं के दुरुपयोग की समस्या की सीमा का अवलोकन प्रदान करता है।

इकाई 1 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/ एड्स की प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के अध्ययन का महत्व

1.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध

1.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग का इतिहास

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी/एड्स के अध्ययन के महत्व को समझने में सहायता करेगी। इसका उद्देश्य मादक द्रव्य मुक्त जीवन व्यतीत करने तथा दूसरों को मादक द्रव्य मुक्त जीवन जीने में सहायता करते हुए स्वस्थ जीवन शैली विकसित करने में आपकी सहायता करना है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- मादक द्रव्य के उपयोग और दुरुपयोग की पहचान कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार से एच.आई.वी. संक्रमण के अवसरों में वृद्धि करता है इस पर चर्चा कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य का दुरुपयोग लोग क्यों करते हैं, स्पष्ट कर सकेंगे; और
- मादक द्रव्य दुरुपयोग के इतिहास का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मानव इतिहास में अनेक महामारियाँ हुई हैं। महामारियाँ रोग होती हैं। इनकी भयंकरता इससे सिद्ध होती है कि ये रोग थोड़े से समय में तेजी से फैलते हैं, तथा जहाँ फैलते हैं उस क्षेत्र में हजारों लोग मौत के ग्रास बन जाते हैं। मध्य युग में काली मौत (Black death) नामक महामारी ने यूरोप की आधी जनसंख्या को समाप्त कर दिया था। इस इकाई में आपको एक और महामारी के विषय में बताया जाएगा जिसने हजारों लोगों की जान ले ली है तथा विश्व में लाखों लोगों के जीवन को संकट में डाला हुआ है। इस महामारी को द्रव्य दुरुपयोग कहते हैं जिसे प्रायः मादक द्रव्य व्यसन के नाम से जानते हैं।

इस श्रृंखला का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति विशेषतः युवाओं को मादक द्रव्य के खतरों के बारे में सूचित व शिक्षित करना है। हम व्यसनकर्ता को भय या धमकी के तरीके से नहीं रोक

सकते। यद्यपि हम खतरनाक मादक द्रव्यों को समाप्त तो नहीं कर सकते लेकिन ठोस, सही और वास्तविक सूचना प्रदान कर खतरों को कम कर सकते हैं।

संभव है आपको ऐसे व्यक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव रहा हो जिसको शराब पीने या अन्य मादक द्रव्य लेने की लत हो। इस इकाई में स्पष्ट किया जाएगा कि द्रव्य दुरुपयोग क्या है! तथा इसके साथ उन कारणों का विश्लेषण किया जाएगा जिनके कारण लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग करते हैं। इस इकाई में द्रव्य दुरुपयोग के निहितार्थ, उनकी रोकथाम और उपचार के संबंध में चर्चा की जाएगी।

1.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के अध्ययन का महत्व

इस पृथ्वी पर सबसे अमूल्य वस्तु हमारा जीवन है। जीवन की गुणवत्ता के बहुत सारे मापदण्ड हैं। एक कहावत है, "एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग होता है।" प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने दिमाग को स्वस्थ रखना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह तब ही होता है जब आप स्वास्थ्य की देखभाल करना सीखें। हम यह सब अपने घर से सीख सकते हैं, विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों तथा समाज की अन्य संस्थाओं व अभिकरणों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में पढ़ी या पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों से हम अपने आपको और समाज को स्वस्थ रखने के उपायों का अध्ययन करते हैं। हमें अनेक बार बताया जाता है कि शराब और अन्य नशीले द्रव्यों का प्रयोग और उनका सेवन जिस तरह से हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है उसी तरह से संपूर्ण समाज के लिए भी खतरनाक है। जिस प्रकार हम अपने लाभ के लिए यातायात के सुरक्षा नियम सीखते हैं, उसी तरह हमें एच आई वी/एड्स और मादक द्रव्यों के बारे में भी पर्याप्त रूप से जानना चाहिए क्योंकि ये हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। मादक द्रव्य और एच आई वी/एड्स के मामले में लापरवाही का अर्थ है मृत्यु। एड्स को जानना ही एड्स से बचाव है। मादक द्रव्यों के बारे में जानने से ही उनसे बचा जा सकता है। वर्तमान में शराब तथा अन्य नशीले द्रव्यों के प्रयोग से मानव जाति को भयंकर खतरा हो गया है क्योंकि मादक द्रव्य का नशा करना विश्व में व्यापक रूप से फैला है। इसमें विशेषकर नव-युवा लोग शामिल हैं। आजकल छोटी आयु में ही शराब पीना एक फैशन बन गया है। शराब के अतिरिक्त बाजार में बहुत सारे जानलेवा मादक द्रव्य मौजूद हैं जिनके पाँच या छह बार प्रयोग से कोई भी व्यक्ति जीवन भर व्यसनी बन सकता है। बाजार में उपलब्ध हेरोइन, कोकेन तथा अन्य मादक द्रव्य के सेवन से बहुत से युवाओं का जीवन बरबाद हो चुका है। इनमें से अधिकतर लोग लापरवाही के कारण व्यसन में फंसे हैं। हम मादक द्रव्य और शराब के विषय में जो जानकारी प्राप्त करते हैं वह मुख्य रूप से पत्र-पत्रिकाओं और मित्रों से प्राप्त करते हैं। यह सूचनाएँ अपूर्ण और गलत होती हैं। हमारा अपना जीवन तथा प्रायः अपने सगे-संबंधियों का जीवन भी सही और संपूर्ण सूचनाओं पर निर्भर करता है। इसलिए ये सूचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं जिन्हें हम अपनी पाठ्यसामग्री में दे रहे हैं। यह सामग्री आपके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आप पहले ही एच आई वी/एड्स के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं। आप यह भी पढ़ चुके हैं कि एच आई वी/एड्स किस प्रकार से रक्त और शरीर के स्रावों के माध्यम से फैलती है। अनेक मादक द्रव्य व्यसनी सीरिज के द्वारा अपने शरीर में मादक द्रव्य लेते हैं। वे लोग उसी सुई को बिना विसंक्रमित किए आपस में इस्तेमाल करते रहते हैं। इससे व्यसनी लोगों में एच आई वी/एड्स से संक्रमित स्त्री-पुरुषों के साथ सहवास या यौन संबंध स्थापित कर लेते हैं और रोग से संक्रमित हो जाते हैं। इस प्रकार एक असंक्रमित स्वस्थ व्यक्ति भी एक बार की क्रिया से ही एच आई वी/एड्स का रोगी बन सकता है। सही सूचना सही दिशा

में प्रेरणा प्रदान करेगी। इस तरह ड्रग्स या मादक द्रव्यों के प्रयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध को जानना और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स दोनों घातक रोग एक–दूसरे से घनिष्ट संबंध रखते हैं। इन दोनों का संबंध नीचे स्पष्ट दिया गया है :

- दोनों का वर्तमान में उदय हुआ है।
- दोनों मुख्य रूप से युवा लोगों को प्रभावित करते हैं।
- दोनों का स्थायी उपचार (इलाज) नहीं है।
- दोनों ही का सामाजिक प्रभाव से संबंध हैं, तथा
- दोनों ही स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स को सामाजिक-स्वास्थ्य समस्या के रूप में माना जाता है जो पिछली 20वीं सदी के अंतिम तिमाही में प्रकट हुई। यह सच है कि शराब का सेवन लोग अति प्राचीन काल से करते आ रहे हैं। परंतु यह आज की तरह कभी भी सामाजिक-समस्या के रूप में उभर कर नहीं आई थी। जैसे कि हम पहले ही बता चुके हैं कि अन्य मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य हैं जो बहुत ही मादक और व्यसनकारी हैं, उनका उदय हाल ही में हुआ है। संचार के विकसित साधनों और यातायात की सुविधाओं की उपलब्धता के कारण मादक द्रव्य बहुत आसानी से मिल जाते हैं। विश्व के किसी भी हिस्से में उत्पन्न मादक द्रव्य किसी भी स्थान पर कुछ दिनों अथवा यहाँ तक कि कुछ ही घंटों में पहुँच सकते हैं। इसी तरह से एच आई वी का पता भी 1981 में लगा तो भी इन 20 वर्षों के थोड़े से समय में ही यह विश्व समस्या बन गई और अनेक देशें की जनसंख्या के लिए घातक खतरा बन गई है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स के शिकार सबसे अधिक युवा लोग ही हैं। युवा लोगों में किसी नई चीज को जानने की बहुत उत्सुकता होती है और उनमें नए प्रकार के

व्यवहारों का अनुभव करने की गहरी ललक होती है। इसी कारण युगांडा (अफ्रीका) जैसे अनेक देशों के युवा लोग व्यापक रूप से इस घातक रोग से मारे गए हैं इसके साथ ही यह तथ्य भी सच है कि किसी खास तरह के व्यवहार से ही यह रोग तेजी फैलता है। एच आई वी संचारण का एक मुख्य मार्ग है, यौन क्रिया। मादक द्रव्यों के प्रभाव से व्यक्ति अपने यौन संबंधों के मामले में गैर-जिम्मेदार बन जाते हैं।

अभी तक मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स के उपचार की खोज नहीं हुई है। इस रोग को नियंत्रण करने के लिए कुछ उपचार अवश्य मौजूद हैं किंतु वे स्थायी इलाज नहीं हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसकी रोकथाम के लिए केवल शिक्षा तथा व्यवहार सुधार पर विद्यालयों और शिक्षा के क्षेत्र में काफी जोर दिया जाता है। ये सर्वाधिक महत्वपूर्ण तरीके हैं जिनके द्वारा ही व्यक्ति और समाज की सुरक्षा की जा सकती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स दोनों ही सामाजिक समस्याएँ हैं। ये दोनों ही जिस तरह से एक व्यक्ति को प्रभावित करते हैं उसी तरह से पूरे समाज को भी प्रभावित करते हैं। ये समाज पर दीर्घकालीन व्यापक प्रभाव छोड़ते हैं। यह सब इस कारण भी है कि इन रोगों का इलाज बहुत ही महँगा है तथा इसका प्रभाव समाज की उत्पादकता पर पड़ता है। बिना समुचित देखभाल और नियंत्रण के ये पूरे समाज को काफी हद तक नष्ट कर सकते हैं।

व्यक्तियों का स्वास्थ्य पूरे समाज के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग से सबसे अधिक युवा लोग अपने महत्वपूर्ण समय में ही शिकार होते हैं। एच आई वी/एड्स से प्रभावित व्यक्ति 10 से 15 वर्ष या थोड़ा अधिक की अवधि तक ही जीवित रह सकता है। ऐसे रोगी का अधिकतर समय स्वास्थ्य केंद्रों (Health Care Centre) में ही व्यतीत होता है। ये दोनों रोग धीरे-धीरे किंतु निश्चित रूप से व्यक्ति को मारते हैं।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स एक दूसरे से किस प्रकार से संबंधित हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

इस इकाई में पहले हम मादक द्रव्य एवं मादक द्रव्य दुरुपयोग शब्दों का प्रयोग एक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कर चुके हैं। इसी प्रकार दुरुपयोग और व्यसन को भी एक ही अर्थ में प्रस्तुत किया जा चुका है। हम इन शब्दों को बारी-बारी से स्पष्ट करेंगे।

मादक द्रव्य क्या है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation - WHO) के अनुसार मादक द्रव्य कोई भी द्रव्य या पदार्थ हो सकता है जो जीवित शरीर के अंदर पहुँचने पर शरीर के सभी अवयवों के संतुलन या उसकी कार्यप्रणाली में परिवर्तन कर सकता है। मादक द्रव्य का चिकित्सीय या गैर-चिकित्सीय कार्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इस शब्द का रूढ़ अर्थ है कि मादक द्रव्य कोई भी द्रव्य या पदार्थ होता है जो प्रयोग करने वाले व्यक्ति की मानसिक क्रिया में बदलाव ला सकता है। ये ऐसे रसायन हैं जो कि प्रयोग करने वाले की केंद्रीय स्नायु-तंत्र व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। इन्हें मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य के नाम से भी जाना जाता है। ये कानूनी या गैर-कानूनी हो सकते हैं।

अधिक प्रतिबंधित मायने में मादक द्रव्य शब्द वह वस्तु है जो उसके प्रयोगकर्त्ता के कार्य करने की मानसिक क्रिया को बदल दे। मादक द्रव्य वह रसायन है जिसका प्रभाव प्रयोगकर्त्ता के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर पड़ता है। इन्हें साइकोट्रॉपिक मादक द्रव्य भी कहते है। इनका प्रयोग वैधानिक/अवैधानिक हो सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की परिभाषा

मिशेल के अनुसार "मादक द्रव्यों का अनुचित प्रयोग करना अथवा बिना चिकित्सीय सलाह और चिकित्सीय कारण के बिना भी अत्यधिक मात्रा में मादक द्रव्यों का उपयोग गैर कानूनी होता है।"

पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रांति के बाद विज्ञान के सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। अफीम ने चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। अंग्रेज चिकित्सक थॉमस सिडेंह (1624-1689) तथा डॉ. थॉमस डॉवर अफीम को विकसित करने के लिए प्रबल समर्थक थे वे अनेक रोगों के इलाज के लिए इसे उपयुक्त मानते थे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य दुरुपयोग को सामयिक या अस्थायी नशे की स्थिति के रूप में परिभाषित किया है जो व्यक्ति एवं समाज को हानि पहुँचाता है। यह किसी (प्राकृतिक या निर्मित) मादक द्रव्य को बार-बार लेने से होता है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

1) लगातार मादक द्रव्य के लेने के लिए गहन इच्छा और आवश्यकता अनुभव होना तथा उसको प्राप्त करने के लिए कोई भी साधन अपनाना।

2) खुराक की मात्रा को बढ़ाने की इच्छा रखना।

3) मादक द्रव्य के प्रभाव पर मानसिक (मनोवैज्ञानिक) तथा कभी-कभी शारीरिक रूप से निर्भर रहना।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य निर्भरता शब्द पर बल दिया है न कि मादक द्रव्य दुरुपयोग पर। तथ्य यह है कि एक व्यक्ति जो रसायन का प्रयोग करता है वह जीवन भर उस रसायन पर निर्भर हो जाता है तथा बाद में वह व्यक्ति उस मादक द्रव्य या रसायन का प्रयोग जीवित रहने के लिए करने लगता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

महत्वपूर्ण शब्दावली

मादक द्रव्य दुरुपयोग पर किसी भी प्रकार की चर्चा करते समय हम बार-बार कुछ खास शब्दावली का प्रयोग करते हैं। इसलिए यह अच्छा रहेगा कि हम उस शब्दावली के अर्थों को जानें ताकि बिना किसी कठिनाई के उस शब्दावली को हम आसानी से समझ सकें।

1) **कोकेन :** यह मादक द्रव्य कोका पौधे से बनाया जाता है जिसे पीड़ानाशक दवाई के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

2) **अत्यधिक इच्छा :** शारीरिक अथवा मनोवैज्ञानिक आवश्यकता जिसको नियंत्रित करना वश में नहीं होता।

3) **एच आई वी/एड्स :** यह रोग मानव प्रतिरक्षा की कमी करने वाले वायरस के कारण होता है।

4) **हेरोइन :** यह अत्यधिक व्यसनी पीड़ानाशक रसायन है जो अफीम पोस्त से तैयार होता है।

5) **नशीला या मादक :** नशे की लत पैदा करने वाला या आत्म-नियंत्रण से परे।

6) **सामाजिक-चिकित्सा :** यह सामाजिक और चिकित्सा से संबद्ध होता है।

7) **जीवाणुविहीन बनना :** रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं से मुक्त करना।

8) **निर्भरता :** निर्भरता दो प्रकार की हो सकती हैं।

   क) **शारीरिक निर्भरता :** जब कोई व्यक्ति कुछ समय के लिए किसी विशेष तरह के रसायन की आदत डाल लेता है अथवा उसका व्यसनी हो जाता है, उस व्यक्ति का शरीर सामान्य कार्य करने के लिए रसायन लेने की आवश्यकता महसूस करता है। कुछ समय के बाद उस व्यक्ति का शरीर उस खास रसायन के प्रयोग किए बिना सामान्य कार्य करने में असमर्थ हो जाता है।

   ख) **मनोवैज्ञानिक निर्भरता :** यह एक दिमागी स्थिति होती है। जब एक व्यक्ति कुछ समय तक किसी रसायन का प्रयोग कर लेता है तो उस रसायन लेने के लिए सुखाभाव महसूस करने लगता है और सुख की इच्छा उसके दिमाग में बैठ जाती है। यद्यपि वह व्यक्ति उस रसायन के बिना भी अपने शारीरिक जीवन को आसानी से संभाल सकता है परंतु उसका दिमाग उस रसायन के लिए लालायित होता है। गांजा इसी तरह का मादक द्रव्य है जो मानसिक लालसा पैदा करता है जबकि उसकी शारीरिक निर्भरता नहीं होती।

9) **सहन शक्ति :** यह एक लम्बे समय तक किसी रसायन का प्रयोग करने की लत का प्रभाव होता है। जब कोई मादक द्रव्य कुछ समय के लिए प्रयोग किया जाता है तो शरीर व दिमाग मादक द्रव्य के प्रभाव को अपने में समाहित कर लेता है। तब उसी तरह के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए अधिक और अधिक मात्रा लेने की आवश्यकता पड़ती है। इसका स्पष्टीकरण केवल सामान्य जीवन जीने वाला व्यक्ति ही दे सकता है। उदाहरण के लिए यदि आज हम अपने सिरदर्द के लिए एक गोली का प्रयोग करते हैं तो इसके बाद हो सकता है उस व्यक्ति को सिरदर्द ठीक करने के लिए दो या दो से अधिक गोलियाँ देने की आवश्यकता पड़े।

10) **प्रत्याहार (छोड़ना):** कोई व्यक्ति लम्बे समय तक किसी रसायन का प्रयोग करता तो वह इसके प्रभावों का आदी हो जाता है। जब व्यक्ति अचानक उस विशेष रसायन का प्रयोग बंद कर देता है तो उसका शरीर और मस्तिष्क उस खास रसायन के अभाव में प्रतिक्रिया करने लगते हैं।

11) **निर्विषीकरण :** शारीरिक रूप से निर्भर रहने वाले मादक द्रव्य व्यसनी द्वारा धीरे-धीरे अपनी लत छोड़ने को निर्विषीकरणं कहते हैं। यह प्रायः निर्भरता वाली उस विशेष मादक द्रव्य की मात्रा कम करते हुए या फिर उसके विपरीत प्रभाव वाली मादक द्रव्य का प्रयोग करके किया जाता है। निर्विषीकरण अन्य किसी मादक द्रव्य की सहायता के बिना भी संभव हो सकता है, यदि व्यक्ति छोड़ने के संलक्षणों को सहन करने के लिए तैयार हो तो कुछ मामलों में एक्यूपंचर पद्धति भी निर्विषीकरण के लिए लाभदायक सिद्ध हुई है।

1.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग का इतिहास

मादक द्रव्य दुरुपयोग उतना ही पुराना है जितना कि मानव का इतिहास। प्राचीन काल के लगभग सभी धार्मिक ग्रंथों में मानव मस्तिष्क में परिवर्तन लाने को लिए मादक द्रव्यों के

प्रयोग का जिक्र किया गया है। धार्मिक महाकाव्यों में इन रसायनों का उल्लेख देवताओं के भोजन या उनके पेय के रूप में हुआ है।

धर्मनिरपेक्ष महाकाव्य जैसे कि इलियड तथा ओडेसी ग्रंथों में इस प्रकार के पौधे के बारे में बताया गया है जिसका प्रयोग करने से जीवन की चिन्ताएँ/तनावों से मुक्ति मिल जाती हैं। यूनान के सैनिक जब युद्ध के सलिए निकलते थे तो वे अफीम द्वारा तैयार कोई पदार्थ तथा अन्य प्रकार के मादक द्रव्य का इस्तेमाल करते थे ताकि वे कुछ संवेदनाएँ भूल जाएँ। यूनानी देवता बैकयुस (Bacchus) तथा रोमन देवी सेरस (Ceres) को शराब और मद्य का संरक्षक माना जाता है।

अफीम का इतिहास

प्राचीन सुमेरियाई शहरों के कुछ हिस्सों की खुदाई करते समय चिकनी मिट्टी की तख्तियाँ मिली हैं जो ईसा पूर्व 5000 वर्ष पुरानी हैं। इन तख्तियों से पता लगा है कि वहाँ पर पोस्त की खेती होती थी और वे अफीम तैयार करते थे। उस समय पोस्त के पौधों को वे लोग **अजोंय** पौधे के नाम से जानते थे। असेरियाई जिसने सुमेरियाई लोगों को अपने अधीन बनाया लगता है कि वे अफीम को औषधि के रूप में प्रयोग करते थे। हमारे पास जानकारी का कोई ऐसा स्रोत नहीं है कि उस समय अफीम का व्यापक रूप से दुरुपयोग किया जाता था या नहीं।

मिस्र के लोग भी अफीम का प्रयोग करते थे। वे लोग कुछ रोगों के इलाज और पीड़ानाशक के रूप में इसका प्रयोग करते थे। यह भी संभव है कि वे अफीम को शराब में मिला कर प्रयोग करते थे। रोमवासी अफीम का दवाइयों और उपशमकों के रूप में प्रयोग करते थे। रोमवासी देशद्रोहियों को क्रूसीरोपण (शरीर में कीलें ठोंकना) के द्वारा दण्ड देते थे। जब वे पीड़ित व्यक्ति पर दया करना चाहते तो उस समय वे उसे शराब में अफीम मिलाकर देते थे ताकि उसे अधिक पीड़ा का अनुभव न हो।

यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटिक जिन्हें औषधि विज्ञान के पिता के रूप में जाना जाता है संभव है उन्हें पोस्त के रस के प्रभावों का पता हो, वे एक पदार्थ तैयार करते थे जिसे वे मेकॉन (Mecon) के नाम से पुकारते थे। इसका उल्लेख पेचिश रोकने व बेहोश करने के प्रयोग के रूप में मिलता है। गालेन रोम का एक प्रसिद्ध चिकित्सक था जिसने अफीम के प्रयोग को बढ़ावा दिया। रोम तथा रोमन शासित प्रदेशों में अफीम को प्रसिद्ध करने में वह प्रमुख साधन था। इसके परिणामस्वरूप रोम का सम्राट सर्वियस भी अफीम खाने की लत में पड़ गया था। ईसवीं सन् की दूसरी सदी के उत्तरार्ध में अफीम रोम के बाजारों में आम बिकती थी।

अरब के चिकित्सक अफीम का व्यापक प्रयोग करते थे उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध अविसेन्न (Avicenna) - 980-1037 ई.) थे। वे स्वयं भी शायद अफीम की अधिक मात्रा का प्रयोग करने से मरे थे। कहा जाता है कि इसी समय में अरब के व्यापारियों ने पूर्व को अफीम से परिचित कराया था। कहा जाता है कि अरब के व्यापारियों ने अफीम को चीन तथा पूर्व के अन्य देशों में पहुँचाया था। बारबोसा नामक पुर्तगाली यात्री ने लिखा है कि अफीम की उत्पत्ति भारत में हुई थी। 1546 ई. में फ्रांस के प्राकृतिक विज्ञानी बारबासा ने एशिया माईनर और मिस्र की यात्रा की तथा उसने देखा कि तुर्क लोग अफीम के अत्यधिक व्यसनी थे तथा वे किसी भी कीमत पर अफीम को खरीदने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

शराब का इतिहास

प्राचीन काल से ही मानव जाति शराब बनाने, उसका खमीरा तैयार करने, आदि की कला से परिचित थी। शराब का प्रयोग व्यापक तौर से किया जाता था क्योंकि यह वैदिक काल से ही उत्सवों, समारोहों यहाँ तक कि बलि देने जैसे धार्मिक कार्यों में भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती थी। इस युग में गांजे के पौधे से तैयार बेहोशी या अचेत करने वाली दवाइयों का प्रयोग भी किया जाता था। जहाँ तक शराब से प्राचीन लोगों की जानकारी का संबंध है इस पर चर्चा करते हुए साइमांड्स ने अपनी पुस्तक "अल्कोहल, इट्स प्रॉडक्शन, प्रोपर्टीज एंड एपलीकेशंस" में कहा है कि इसमें तनिक भी शंका नहीं है कि भारत में शराब बनाने की कला 800 ई.पू. में ही ज्ञात थी। जहाँ तक श्रीलंका का सवाल है उसके विषय में समयावधि ज्ञात नहीं है (डॉ. जॉन चुंकपुरा अल्कोहोज्लिम, साइको सोशिल वेरीएबल्स, 1988)।

यद्यपि शराब में अफीम की तरह अनेक चिकित्सीय विशेषताएँ होती हैं। परंतु इसके दुरुपयोग की संभावना को लोग प्राचीनकाल से ही जानते थे। तभी से समाज और धर्म दोनों ही इसके खतरों को कम करने का प्रयोग करते रहे हैं। इस संदर्भ में दि कोड ऑफ हम्मुराबी (1700 ई.पू.) बनाया गया जिसमें बेबीलोन के भोजनालयों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। रोम के सम्राट ने अंगूर की खेती को हतोत्साहित कर शराब पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया। लोगों को अंगूर के खेतों को समाप्त कर अन्य उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

मध्य काल में, कुछ यूरोपीय देशों में बहुत ही अधिक नशा करने वाले लोगों को उनके नथुनों में रस्सी डालकर शहर से बाहर निकाला जाता था। धर्म ने शराब के इस्तेमाल में कमी की तथा किसी हद तक संपूर्ण परहेज को लागू किया। परंतु यह देखा गया है कि इसमें कानून की अपेक्षा धार्मिक पाबंदी अधिक सफल रही।

औद्योगिक क्रांति से पहले मद्यपान से इस तरह की समस्याएँ और चुनौतियाँ खड़ी नहीं हुई थीं जिस तरह से आज हमारे सामने हैं। जब से शराब निर्माण की नई पद्धतियाँ विकसित हुई हैं जिनमें अधिक नशे वाले द्रव्य होते हैं तबसे इस समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। इसके अलावा शराब पीने को प्रोत्साहन देने के लिए बहुत ही आकर्षक विज्ञापनों और प्रचार अभियानों का भी योगदान है।

मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य का इतिहास

प्रथम विश्व युद्ध के बाद मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य के दुरुपयोग का मामला बहुत ही चिन्ताजनक बन गया था। हेनस्थि ड्रेजर के द्वारा 1898 में हेरोइन अफीम के मिश्रण से कृत्रिम रूप से तैयार की जाती थी। युद्ध के दौरान जख्मी सिपाहियों के इलाज के लिए हेरोइन का प्रयोग किया जाता था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान बहुत सारे जख्मी सिपाहियों का हेरोइन से उपचार किया गया था और बाद में उनमें से बहुत से सैनिक हेरोइन के आदी हो गए थे। पिछले तीन दशकों से गैर-कानूनी मादक द्रव्य के दुरुपयोग की दर में अभूतपूर्व

वृद्धि हुई है और इसका दुरुपयोग विश्व के सभी देशों में होने लगा है। कोई भी राष्ट्र मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या को कम नहीं कर पाया है। दूसरी ओर विश्व समुदाय इस समस्या पर अपनी गहरी चिंता जता रहा है। 1960 के दशक के मध्य और इसके बाद एल.एस.डी. जैसे भयंकर मादक द्रव्य के प्रयोग के बारे में भी सुना गया। 1970 तक आकलन किया गया है कि पूरे विश्व में लगभग 20 लाख व्यक्ति एल.एस.डी. का दुरुपयोग कर रहे थे।

1960 के दशक की अंतिम अवधि में कोकेन और हेरोइन काफी प्रसिद्ध हो गई थीं। रॉक म्यूजिक और हिप्पी संस्कृति ने मादक द्रव्यों की संस्कृति में वृद्धि की और इसके प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया। 1970 के दशक के अंतिम दिनों में विश्व में अनेक आंतकवादी समूहों का उदय हुआ। आतंकवाद, हथियारों का व्यापार, तथा ड्रग्स के व्यापार का गठजोड़ हो गया। ड्रग्स का व्यापार गोल्डन ट्रायंगल में और दक्षिण अमरीकी प्रदेशों में कोकेन का व्यापार अनेक आतंकवादियों के हाथ में आ गया था।

स्वास्थ्य मुद्दे के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग

आज हमें समाज को शिक्षित करने की आवश्यकता है जिसमें विशेषकर युवा वर्ग बताना है कि वे समाज में बढ़ रही मादक द्रव्य दुरुपयोग की प्रवृत्ति का किस प्रकार सामना करें। यह तब ही संभव हो सकता है जब राजनीतिक नेता, विधि निर्माता और समाज मादक द्रव्य की विभिन्न समस्याओं की व्यापकताओं की पहचान करें तथा स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं को भरपूर सहयोग देने के लिए मिल कर कार्य करें।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एक महामारी की तरह है, जिसने विश्व के प्रत्येक कोने पर को अपना कब्जा जमा लिया है। नए मादक द्रव्य तथा इसका तंत्र पुराने मादक द्रव्य दुरुपयोग से भी अधिक भयानक है। इसलिए समाज एक साथ मादक द्रव्य दुरुपयोग के रोकथाम की आवश्यकता के बारे मं संगठित और जागरूक हो। इसके साथ ही स्वास्थ्य संबंधी नीतियों का निर्माण करते समय सरकार की स्वास्थ्य नीतियों में मादक द्रव्य मुद्दों को भी शामिल किया जाना चाहिए। समीक्षा करते समय मादक द्रव्य नीतियों को भी स्वास्थ्य नीतियों के साथ संबद्ध करना चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में लोक अवधारणा

"राज्य अपने लोगों के पोषण और जीवन स्तर का विकास करेगा तथा अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करेगा और विशेषकर राज्य नशीले पेय पदार्थों तथा मादक द्रव्यों को जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, केवल उपाचार के लिए प्रयोग को छोड़ कर, उनके उपभोग पर कानूनी पबंदियाँ लगाने का प्रयास करेगा।" (भारत का संविधान - अनुच्छेद 47)

महात्मा गांधी ने कहा है कि :"यदि मैं भारत का एक घंटे के लिए तानाशाह नियुक्त हो जाऊँ तो मेरा सबसे पहला काम यह होगा कि मैं देश की सभी शराब की दुकानों को बिना किसी क्षतिपूर्ति के एकदम बंद कर दूँगा और सभी टोडा पत्तियों को नष्ट कर दूँगा।" (दि हरिजनः 1935)। जिस तरह हम समस्या के मार्ग को देखेंगे उसी तरह इसके समाधान का मार्ग भी प्राप्त होगा शराब की लोक धारणा द्वैधवृत्ति बन चुकी है। भारत में नशाबन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन में आर्थिक तथा राजनीतिक दबाव एवं बाध्यता आड़े आ रही हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की चुनौती एक गंभीर समस्या है। इसके साथ ही लोगों में जानकारी का अभाव भी समान रूप से गंभीर है। आज भारत के पास मादक द्रव्य संबंधित अपराधों को रोकने, अपराधियों को दंडित करने के लिए सशक्त कानून है और नशे के व्यसनियों के इलाज के लिए अधिक उपचार केंद्र मौजूद हैं। वास्तव में जनता की और सरकार की ओर से अभी तक सामूहिक प्रयास आरंभ नहीं हुए हैं। इस स्थिति के लिए कुछ निम्नांकित कारण दर्शाए गए हैं:

मतभेद

इस स्थिति की उपेक्षा का सबसे बड़ा कारण है आपसी मतभेद। लोग एकमत नहीं हैं। सामान्य लोगों में मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में कुछ गलत धारणाएँ बनी हुई हैं। कुछ लोग इसे पश्चिमी देशों की समस्या के रूप में देखते हैं तो दूसरे लोग अमीरों की समस्या मानते हैं। कोई भी समस्या को इस तरीके से नहीं देखता जो राष्ट्र तथा इसकी कार्य निष्पादन प्रणाली को प्रभावित कर रही है।

असहाय की भावना

आज भी नशे की लत को अपराध और नैतिक कमजोरी की दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए व्यक्ति, माता-पिता तथा अन्य रिश्तेदार इसे छुपाए रखते हैं। इसके लिए परिवार के सदस्य इसे शर्म और अपराध मानते हैं जो उन्हें समय पर सहायता और समाधान प्राप्त करने के लिए रोकते हैं। इसके अतिरिक्त इलाज किए गए व्यसनी के पुनः व्यसन में पड़ने की दर ऊँची होने के कारण व्यसनी और इससे संबंधित लोग सहायता प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते हैं।

दोषारोपण

लोग व्यसन के विस्तार का दोष पश्चिमी जीवन-शैली को देते हैं। यद्यपि इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है किंतु ऐसा करने से समस्या का हल तो नहीं होता है। आज यह संभव नहीं है कि कोई अलग-थलग रहे। पश्चिमी सभ्यता के लाभ लोगों को तब तक प्राप्त नहीं हो सकते जब तक उनकी जीवन-शैली को कुछ हद तक न अपनाया जाए अर्थात् पश्चिमी प्रगति का लाभ उठाने में जीवन-शैली का कुछ प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

समाधान क्या है?

इस स्थिति से निपटने के लिए एक मार्ग यह है कि सामान्य ज्ञान का दृष्टिकोण अपनाया जाए। इस संबंध में लोगों को उचित रूप से शिक्षित करने पर उदासीनता, असहायपन तथा दोषारोपण की भावना में कमी आएगी। यह प्रशिक्षण प्रक्रिया विद्यालय स्तर से आरंभ होनी चाहिए। अभिभावकों को बच्चों के मादक द्रव्यों की लत में पड़ने की संभावनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान करने में असहायता की भावना में कमी आएगी। विद्यालयों की तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग कार्यस्थलों पर भी एक गंभीर समस्या है। इसलिए कर्मचारियों और नियोक्ताओं को मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणामों के बारे में समुचित जानकारी होनी चाहिए।

बच्चों ने शीघ्र ही जान लिया कि तम्बाकू और शराब भी अन्य अवैध मादक द्रव्यों की तरह हानिकारक हैं। लेकिन किसी मादक द्रव्य के वैध होने या दूसरे के अवैध होने से उसके वास्तविक खतरों पर कोई अंतर नहीं पड़ता। यदि कोई चिकित्सक यह कहता है कि गांजा तम्बाकू से अधिक हानिकारक है तो यह सच नहीं है।

सरकार को इस समस्या की गंभीरता के लिए व्यापक सर्वेक्षण करना चाहिए जिसमें संभावित असुरक्षित क्षेत्रों को दर्शाया जाए। सरकार को चाहिए कि वह मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम और इसके इलाज के लिए अन्य एजेंसियों को भी सहायता के लिए प्रोत्साहित करे।

मोहकता (आकर्षण) को हटाना

मादक द्रव्य दुरुपयोग समाज में प्रचलित कुछ मान्यताओं के कारण मानव जाति गंभीर जोखिम में फंस गई है। मादक द्रव्य दुरुपयोग पर नियंत्रण करने के लिए महत्वपूर्ण है। अपने विश्वासों, आदतों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन करना, जो मादक द्रव्य

तथा शराब को प्रसन्नतादायक, आकर्षक, मोहक और विशिष्ट बनाते हैं। समाज को सक्रियता से उन विशेष प्रचार अभियानों की समीक्षा करनी होगी जो आजकल मादक द्रव्यों को विशिष्ट बनाते हें। हमें इस स्थिति को शिक्षा के द्वारा सही वर्णन एवं वास्तविक अनुभवों को प्रचार कर बदलना होगा। आमतौर पर पत्र-पत्रिकाओं में तम्बाकू और शराब से संबंधित विज्ञापनों को इतने आकर्षक ढंग से दिखाया जाता है कि इनके प्रयोग से सुकून प्राप्त होता है और थकान मिट जाती है। आज सब लोग उस मुद्रित लाइन के विषय में जानते हैं जिसमें कहा जाता है कि"रिलेक्स, हैव ए चारमीनार" या"डाइरेक्टर्स स्पेशल" में वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि धूम्रपान करना ही थकान को दूर करने का एकमात्र साधन है या किसी निगम या संस्था में तरक्की प्राप्त करनी है तो शराब का सेवन करें इत्यादि।

यदि समाज मादक द्रव्य दुरुपयोग और शराब सेवन को अल्प बुद्धि और मूर्खता के रूप में देखने लगे तो रोकथाम के कार्य और अधिक सफल होंगे।

धीरे-धीरे समाज एक स्थिति में पहुँचने की आशा कर सकता है जहाँ व्यसनी भी यह महसूस करें कि वे भटके हुए थे और उन्होंने जीवन का वास्तविक आनंद नहीं उठाया।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 सारांश

इस इकाई के अनेक भागों का अध्ययन करने के बाद आप मादक द्रव्य दुरुपयोग समस्या से परिचित हो गए हैं। इसके अध्ययन के विभिन्न पक्षों के महत्व को समझ गए हैं। पहले भाग में अध्ययन के महत्व के संबंध में विस्तृत विवरण दिया गया है। दूसरे भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स जैसी दो भयंकर महामारियों के संबंध के बारे में बताया गया है। अगले भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग का वर्णन है जो इस अध्ययन के महत्वपूर्ण पक्षों से परिचित कराने में सहायता प्रदान करता है।

अंतिम भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग के इतिहास के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई है। सारांश वाले भाग में लोगों को मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में अवधारणा और व्यवहार का वर्णन किया गया है। इस इकाई का सम्पूर्ण अध्ययन करने के बाद आप अनेक अपरिचित विषयों पर आत्मविश्वास के साथ खुलकर चर्चा कर सकते हैं।

1.6 शब्दावली

कोकेन : पीड़ानाशक मादक द्रव्य है जो कोलकोवा कोक पौधे की पत्तियों से बनती है।

अत्यधिक इच्छा : अपनी इच्छा के नियंत्रण से बाहर शारीरिक और मानसिक आवश्यकता अनुभव करना।

एच आई वी/एड्स : एक ऐसा रोग जो मानव प्रतिरक्षा शक्ति में कमी करने वाले वायरस के कारण होता है।

हेरोइन : यह बहुत ही तेज व्यसनकारी पीड़ानाशक मादक द्रव्य होती है जो अफीम पोस्त से तैयार होती है।

उन्माद होना : स्वयं के नियंत्रण से बाहर की स्थिति पैदा करने में समर्थ।

सामाजिक-चिकित्सा : सामाजिक और चिकित्सा क्षेत्रों से संबंधित।

जीवाणुरहित : जीवाणुओं को नष्ट करना जो रोगों को पैदा करते हैं।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

यूनाइटेड नेशनस डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक इनफोर्मेशन, जिनेवा, (1992), *ड्रग एब्यूज*।

यू.एन.डी.सी.पी. रीजनल ऑफिस फॉर साउथ एशिया (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट*, नई दिल्ली।

नेमीशरण, मित्तल, (1991), *ड्रग माफियाज*, पुस्तक महल, नई दिल्ली।

ईरा मोदनर एंड अलान विटेजेक्स, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स*, पैंगुईन बुक, लंदन।

अनिल, अग्रवाल, (1995), *नारकोटिक ड्रग्स*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) हम कुछ विषयों का अध्ययन करते हैं जो हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, वहीं पर हम अन्य विषयों का अध्ययन करते हैं जो हमारी जीविका उपार्जन में महत्व रखते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स दो महामारियाँ हैं। ये हमारे समाज में व्याप्त हैं। ये किसी को भी नष्ट कर सकती हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हमें इनकी समुचित जानकारी हो ताकि व्यक्ति स्वयं तथा उसके संबंधी एवं मित्र इससे बच सकें और निरोग रह कर आनन्द से जीवन व्यतीत करें।

   मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी/एड्स के बारे में न केवल अज्ञानता है अपितु समाज में अनेक गलत अवधारणाएँ भी व्याप्त हैं। इन दोनों मुद्दों की समुचित जानकारी सभी नागरिकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न II

1) ये दोनों रोग अनेक प्रकार से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों समस्याएँ सामाजिक और चिकित्सा संबंधी हैं। दूसरे, दोनों व्यक्ति की व्यवहार संबंधी समस्याएँ हैं। तीसरे, दोनों ही रोग मुख्य रूप से युवाओं को प्रभावित करते हैं। चौथा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

बोध प्रश्न III

1) विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य की लत को सामाजिक या सतत् नशे की स्थिति के रूप में परिभाषित किया है। जो मादक द्रव्य (प्राकृतिक या कृत्रिम) का बार-बार उपभोग करने से उत्पन्न होता है। यह व्यक्ति और समाज दोनों को क्षति पहुँचाती है।

बोध प्रश्न IV

1) व्यसन के व्यापक प्रसार के लिए पश्चिमी जीवन-शैली पर आरोप लगाया जाता है। यद्यपि इसमें कुछ सच्चाई है परंतु दोषारोपण से समस्या का हल नहीं होता। आज कोई भी अकेला नहीं रह सकता। पश्चिमी सभ्यता का लाभ उठाने के लिए उसकी कुछ बुराइयों का आना स्वाभाविक है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 2 सामान्यतः प्रयोग वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूह

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं?

2.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित सिद्धांत

2.4 मादक द्रव्य के प्रकार

2.5 मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित गलत धारणाएँ

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको उन मादक द्रव्यों के बारे में विस्तार से बताया जाएगा जिनका प्रायः लोग दुरुपयोग करते हैं। लोग मादक द्रव्यों का दुरुपयोग क्यों करते हैं, इससे संबंधित सभी कारणों को आपके समक्ष रखा जएगा। इस इकाई का उद्देश्य आपको विभिन्न प्रकार के बहुत ही नशीले मादक द्रव्यों से संबंधित समुचित जानकारी प्रदान करना है। इसमें आपको यह भी बताया जाएगा कि इनका हमारे मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के स्पष्टीकरण से मादक द्रव्यों और उनके दुरुपयोग के बारे में जो गलत विचार और धारणाएँ बनी हैं, उनको दूर करने में आपको सहायता मिलेगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- लोगों द्वारा दुरुपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य के प्रकारों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले विभिन्न नशीले द्रव्यों और उनके कार्यों को समझ सकेंगे;
- लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग क्यों करते हैं यह जान सकेंगे;
- व्यसन एक रोग है इसको समझ सकेंगे; और
- मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले संभावित समूहों में विभेद कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही मानव अनेक मादक द्रव्य जैसे कि मांग और शराब का दुरुपयोग करता आ रहा है। आज विज्ञान की प्रगति के कारण ऐसे शक्तिशाली मादक द्रव्य निर्मित होने

लगे हैं जो शराब से 100 गुणा अधिक हमारे मस्तिष्क को प्रभावित कर सकते हैं। ये मादक द्रव्य केवल मानव मस्तिष्क के कार्यों को प्रभावित ही नहीं करते अपितु अत्यधिक व्यसनकारी भी हैं। बहुत सारे युवा इन रसायनों की वास्तविक प्रकृति से अनभिज्ञ हैं। ज्ञान में शक्ति होती है। यह पाठ आपको इन रसायनों के संबंध में समुचित जानकारी देता है। इससे आप सही निर्णय लेने में समर्थ होंगे और इन सूचनाओं को अन्य लोगों तक पहुँचाने में समर्थ होंगे। मादक द्रव्य खतरनाक नहीं होते हैं। केवल उनका दुरुपयोग खतरनाक होता है।

2.2 लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं?

लोग अनेक प्रकार के होते हैं। इसलिए वे विभिन्न कारणों से मादक द्रव्य का प्रयोग अथवा दुरुपयोग करते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग के वास्तविक कारणों की पहचान करना बहुत कठिन है। कारण कुछ भी हो सकते हैं किंतु यह तो सच है कि मादक द्रव्य का दुरुपयोग वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से हानिकारक है। एक व्यसनी लगातार मादक द्रव्य का दुरुपयोग करता है जबकि वह जानता है कि जिस मादक द्रव्य का वह दुरुपयोग कर रहा है वह उसे समाप्त कर देगी। फिर भी वह इस व्यसन को छोड़ने में असमर्थ रहता है।

लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग क्यों करते हैं इसका साधारण कारण यह है कि उनको आनन्द की अनुभूति कराता है। दूसरे शब्दो में आनन्द प्राप्त करने के लिए मादक द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति खुश रहना चाहता है। यह खुशी उसे मादक द्रव्य अति शीघ्र प्रदान कर सकता है और थोड़े समय के लिए संभवतः वह अपनी सभी चिन्ताओं और दुखों को भूलने में समर्थ हो जाता है। मादक द्रव्य लेने के बाद लोग अपनी चिन्ताओं को भूल जाते हैं और प्रसन्नता महसूस करते हैं। इसलिए लोग लगातार उनका सेवन करते हैं जबकि वे जानते हैं कि मादक द्रव्य उन्हें प्रत्यक्ष रूप से हानि पहुँचा रहा है। इसके अतिरिक्त भी अनेक कारणों से लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग करते हैं। इस संबंध में कुछ तथ्य नीचे दिए जा रहे हैं।

साथियों का दबाव : प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह युवा हो या वृद्ध, दूसरे लोग विशेषतः उनके मित्र उसके बारे में क्या सोचते हैं इससे वह बहुत प्रभावित होता है। हमारी सोच और कार्यों पर प्रभाव साथियों दबाव (Peer Pressure) कहलाता है। इस संबंध में यह देखा गया है कि किशोर अधिक चिंतित रहते हैं कि उनके मित्र क्या सोचते हैं। यह सब इसलिए होता है कि वे विश्व की वास्तविक सच्चाइयों के बारे में वे बहुत कम जानते हैं किंतु वे सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं। इस स्थिति में युवा आसानी से सही और गलत में अंतर नहीं कर सकते। हम चाहते हैं कि हमारे लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति हमें स्वीकार करें और हमारी प्रशंसा करें। एक किशोर के लिए उसके मित्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए व्यक्ति अपने मित्रों की माँग का पालन न चाहते हुए भी करने लगता है।

मादक द्रव्य की तरह साथियों का दबाव कार्य के अनुसार सही भी हो सकता है और गलत भी। यदि मित्र अच्छे हैं तो निश्चित रूप से व्यक्ति पर प्रभाव अच्छा ही होगा। दुर्भाग्यवश इसी तरह का साथियों का दबाव किसी एक समूह में व्यवहार संहिता के रूप में स्वीकृत है तो किसी को भी गलत मार्ग पर जाने के लिए प्रभावित करता है। मादक द्रव्य सेवन करने वालों का आत्म विश्लेषण बहुत कम होता है इसलिए अपने व्यवहार में साथियों की स्वीकृति को बहुत महत्व देते हैं। इसलिए वे स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अन्य लोगों को अपने समूह में शामिल होने और वैसा ही व्यवहार बनाने के लिए राजी कर लेते हैं।

जिज्ञासा (कौतूहल) : जिज्ञासा होना एक सहज वृत्ति होती है। यह हमें उन चीजों को देखने और समझने में सहायता करती है जिन्हें हम नहीं जानते। यह जिज्ञासा वृद्धों और युवाओं दोनों को प्रभावित करती है लेकिन युवा अधिक प्रभावित होते हैं। वे देखते और सुनते हैं कि मादक द्रव्य क्या करता है। इसके बाद वे इसका स्वयं अनुभव करना चाहते हैं। पहली बार सेवन के प्रभाव से व्यक्ति बहुत प्रभावित होता है और वह लगातार मादक द्रव्य का इस्तेमाल करने लगता है। जितनी कम आयु में वह एक बार मादक द्रव्य का स्वाद चख लेता है तो उतनी ही जल्दी बार-बार इसका अनुभव करने की संभावना होती है।

अनभिज्ञताः लोगों में मादक द्रव्य तथा इसके प्रभावों के बारे में आमतौर पर गलत सूचनाएँ होती हैं। सरकारें, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ और अन्य लोग सही सूचनाओं को संचारित में करने में आंशिक रूप से ही सफल हुए हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व में हो रहा है, झूठी कल्पनाओं में वृद्धि हुई है, तथ्यों को विकृत और हास्यास्पद बना दिया है। व्यक्ति पहली बार मादक द्रव्य का सेवन हानि न होने के विश्वास के साथ प्रयोग के तौर पर करता है। यदि मादक द्रव्य व्यक्ति की इच्छानुसार प्रभाव देता है तो वह स्वास्थ्य संबंधी खतरों की जानकारी के अभाव में निरंतर प्रयोग करने लगता है। जब उसको हानि के बारे में पूरी तरह से पता लग जाता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। ऐसी हालत में व्यक्ति व्यसन बंद करना चाहे तो भी नहीं कर सकता और न ही क्षति को पूरा कर सकता है।

एकाकीपन (Alienation) : एकाकीपन व्यक्ति का एक ऐसा अनुभव है जिसमें वह मानता है कि वह जिस समाज में रहता या काम करता है वह उस समूह का हिस्सा नहीं है। व्यक्ति की आवश्यकता है कि वह परिवार, जाति, समुदाय अथवा किसी देश से जुड़ा हो। व्यक्ति जब इनमें से किसी समूह से जुड़ा न हो तो वह अपने को अकेला मानने लगता है और किसी समूह से संबद्ध होना चाहता है। इसी तरह अकेला महसूस करने वाले समान इच्छा के लोग एकत्रित हो जाते हैं और एक नया समूह निर्मित कर लेते हैं और अपने तनाव से बचने के लिए मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं। वे महसूस करने लगते हैं कि उनको एक अच्छा वातावरण मिल गया है जहाँ पर मादक द्रव्य सेवन करने वालों का स्वागत होता है। जिसका परिणाम व्यक्ति और समाज दोनों के लिए भयानक हो सकता है।

बदलती सामाजिक संरचना : समाज में लगातार परिवर्तन होता रहता है। कभी-कभी यह परिवर्तन इतना तेजी से होता है कि सब लोग इसके साथ सामंजस्य करने में असमर्थ रहते

हैं। कभी-कभी बुरे परिवर्तन होते हैं जब एक समाज अपने समूह को या उसके सदस्यों को परिवर्तन में सहायता और सहयोग प्रदान करता है तो उनमें से कुछ लोग परिवर्तन के साथ तालमेल में पिछड़ जाते हैं और वे मादक द्रव्य की दुनिया में आश्रय एवं सहायता प्राप्त करने लगते हैं। यह इसलिए होता है कि वे लोग इस परिवर्तन को समझने में असमर्थ रहते हैं और परिवर्तन की नई परिस्थितियों की आवश्यकताओं को पूरी नहीं कर पाते। इन्हीं कारणों में से एक कारण यह है कि गाँवों से शहरों में आने वाले युवकों के कारण व्यसनकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। छात्र ग्रामीण जीवन-शैली से शहरी जीवन शैली में प्रवेश के कारण मादक द्रव्य दुरुपयोग का आश्रय लेते हैं।

शहरीकरण और बेरोजगारी : हमारे देश में विश्व के अनेक हिस्सों की तरह ही बहुत से लोग रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों में जाते हैं। प्रायः इन लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे लोग बिलकुल अलग तरह के वातावरण से आते हैं जहाँ वे स्थिति की वास्तविकता को समझने और उसमें समायोजित होने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। वे पहली बार अपने परिवारों से अलग होते हैं। शहरों का जीवन भिन्न प्रकार की परंपराओं और मूल्यों का होता है जिसे ग्रामीण लोग स्वीकार करने में असमर्थ होते हैं। शहरों में उनके परिवार और मित्र न होने के कारण उन्हें किसी तरह की सहायता नहीं मिलती है जिससे वे अपने को एकाकी और अलग-थलग मान बैठते हैं। यह एकाकीपन उन्हें हताश और तनाव की स्थिति में धकेल देता है।

गाँवों से शहरों में आने वाले अनेक लोगों का सामान्यतया शैक्षिक स्तर बहुत निम्न होता। इस हालत में वे बेरोजगार रहेंगे। अधिकतर प्रवासी लोगों की परंपरागत सहायता समाप्त हो जाती है और वे एकाकी तथा हताशा का समाधान मादक द्रव्य को मान बैठते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) क्या मादक द्रव्य दुरुपयोग का कोई एक ही कारण है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित सिद्धांत

मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या अत्यंत जटिल है। वैज्ञानिक, चिकित्सक और समाजशास्त्री इन समस्याओं को विभिन्न कोणों से समझने का प्रयास करते रहे हैं। इन लोगों ने अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। इनमें से कुछ लोगों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि लोग

मादक द्रव्य लेना आरंभ क्यों करते हैं तो अन्य लोगों ने इस सिद्धांत की समीक्षा की है कि लोग मादक द्रव्य का क्यों लगातार प्रयोग करते रहते हैं। कुछ सिद्धांत इन दोनों पक्षों की समीक्षा करते हैं।

जैविक सिद्धांत

क) **वंशानुगत सिद्धांत :** इस सिद्धांत में कहा गया है कि मद्यपान करना एक वंशानुगत रोग है। यदि एक व्यक्ति मद्यपान करने का आदी है तो उसकी संतान भी मद्यपान की आदी हो सकती है। अनुसंधानकर्ता इसे स्पष्ट करने में असमर्थ रहे हैं कि यह क्यों होता है?

ख) **अंतःस्रावी सिद्धांत :** कुछ वैज्ञानिक यह विश्वास करते हैं कि मद्यपान करना शारीरिक अंतःस्रावी व्यवस्था की दुष्क्रिया के परिणामस्वरूप होता है। अंतःस्रावी व्यवस्था में कुछ गड़बड़ होने के कारण कुछ लोग शराब को समुचित रूप से पचा नहीं पाते और इस कारण वे मद्यपान के आदी हो जाते हैं।

ग) **एलर्जी से संबंधित सिद्धांत :** कुछ लोगों में अज्ञात कारणों से शराब से एलर्जी होती है इसलिए यह रोग की अपेक्षा शराब की एलर्जिक प्रतिक्रिया है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत : इस सिद्धांत का आधार यह है कि व्यसनी/मद्यपान करने वाले व्यक्ति का एक अलग विशेष मनोविज्ञान होता है जो इसे मद्यपान करने वाला बनाता है।

क) **मनोविश्लेषण सिद्धांत :** यह सिद्धांत कहता है कि किसी भी प्रकार का व्यसन व्यक्ति की दमित भावना, बचपन के आघात, अधूरी आवश्यकताएँ, यहाँ तक कि स्वयं को दण्डित करने की प्रक्रिया का परिणाम होता है। व्यसन का स्रोत अचेतन मस्तिष्क में होता है, इसलिए किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह स्वयं इस समस्या का समाधान निकाल ले।

ख) **सीखने का सिद्धांत :** इस सिद्धांत का मानना है कि व्यसन एक सीखने की आदत है। व्यक्ति का मानना है कि अपने अनुभव से मादक द्रव्य के सेवन से समस्याएँ हल की जा सकती हैं। इसलिए जब व्यक्ति के समक्ष समस्याएँ पैदा होती हैं तो उनको सुलझाने के लिए वह मादक द्रव्य का सेवन करेगा। जब ये कार्य बार-बार किए जाए तो वे इसके आदी हो जाएँगे।

ग) **विशिष्ट व्यक्तित्व सिद्धांत :** यह सिद्धांत कहता है कि कुछ व्यक्तियों में पहले से ही ऐसे गुण होते हैं जिनके कारण वे व्यसनी हो जाते हैं। इस तरह के लोग किसी भी तरह के दबाव और असफलता को सहन नहीं कर सकते। वे स्वयं एवं विश्व से अवास्तविक इच्छाएँ रखते हैं। इस तरह के लोग जीवन में आसान तरीका या मार्ग खोजते हैं।

सामाजिक सिद्धांत : व्यसनी लोग कभी भी मादक द्रव्यों का प्रयोग अकेले नहीं करते। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक सामाजिक क्रिया है। मादक द्रव्य का उपयोग या दुरुपयोग धार्मिक कारणों से भी किया जाता है। इसलिए यह मानना स्वाभाविक है कि मादक द्रव्य का दुरुपयोग सामाजिक-धार्मिक आचार-व्यवहार से प्रभावित है।

सांस्कृतिक सिद्धांत : यह सिद्धांत प्रत्यक्ष रूप से शराब के प्रयोग पर लागू होता है। एक व्यक्ति द्वारा शराब का प्रयोग करने के लिए तीन महत्वपूर्ण घटक माने जाते हैं। वे हैं : शराब पीने के प्रति समाज का दृष्टिकोण, अन्यों के लिए यह तनाव कम करने का एक साधन है और तीसरा कारण है कि समाज में संस्कृति के कारण तनाव। यदि सांस्कृतिक नियम कड़े हैं उस स्थिति में तनाव अधिक होगा और समाज के सदस्य इसे स्वीकार नहीं कर

सकते हैं। इसलिए यह संभव है कि इस तरह के समाज में मद्यपान के व्यसन में और वृद्धि हो जाए।

असामान्य (Devialt) व्यवहार सिद्धांत : कई बार मद्यपान का व्यसन समाज, या अन्य शक्ति संरचना के मौजूदा मानदण्डों के विरुद्ध विद्रोह के कारण होता है। यदि समाज व्यसन को असामान्य व्यवहार के रूप में निर्धारित करता है तो विद्रोहियों को यह व्यवहार मद्यपान करने के लिए उत्साहित कर सकता है। जैसा कि आपने देखा है कि एक भी सिद्धांत ऐसा नहीं है जो मद्यपान के जटिल तथ्यों को पूरी तरह स्पष्ट करता हो। अभी भी इस संबंध में अनुसंधान जारी हैं जो मद्यपान के कारणों को और अधिक विस्तार से समझने में हमारी सहायता कर सकें।

2.4 मादक द्रव्य के प्रकार

निम्नलिखित तालिका आपको सामान्यतः दुरुपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य के नाम, उपयोग के तरीके, अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक प्रभाव, छोड़ने के संलक्षण और सहन करने की शक्ति का विकास करने की जानकारी प्रदान करेगी:

क्रं. सं.	मादक द्रव्य का नाम	दुरुपयोग का तरीका	दुरुपयोग सहने का अल्पकालिक प्रभाव	दुरुपयोग का दीर्घकालिक प्रभाव	छोड़ने के संलक्षण	स्तर
1.	शराब	मुँह से	तंदुरुस्ती की भावना, आवास आभाव, प्रेरणा शक्तिक्षीण व निर्णय शक्ति का आभाव	जिगर को हानि मस्तिष्क को सन्निपात मानसिकता	चिंता, नींद न आना, बहुत	थोड़ा या
2.	स्वापक पीड़ानाशक अफीम, मार्फिया हेरोइन ब्राउन	मुँह से, सुई द्वारा, धूम्रपान से	12 घंटे तक तंदरुस्त बने रहने की भावना भूख न लगना, उन्नीदापन	मानसिकता क्षति, श्वास प्रणाली की क्षति तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधित समस्याएँ	उल्टी दस्त लगना, सर्दी जुकाम, शरीर में ऐंठन, मरोड़	बहुत
3.	उत्तेजक, कोकेन, एम्फीटेमाइन	मुँह से, सुई द्वारा, नाम द्वारा	सुख बोध, मानसिक और शारीरिक सक्रियता में वृद्धि उच्च रक्तचाप	अधिक चिंता, नाक का अल्सर मस्तिष्क को क्षति अवसाद	अनिंद्रा, बेचैनी शरीर में ऐंठन भूख में वृद्धि	बहुत उच्च
4.	अवसादकारी शराब,* बारबीट्ररेट्स डायजीपाम	मुँह से सुई द्वारा	सुख बोध, चिंता से मुक्ति, नियंत्रण में कमी मानसिक और शारीरिक समन्वय में कमी	ग्लानि, थकान अस्पस्ट दृष्टि अनिंद्रा, अवसाद माँग शक्ति में कमी	सन्निपात कांपना, अनिंद्रा, बैचेनी, दस्त उल्टियाँ	बहुत उच्च

5.	मतिभ्रम एन. एस., एल.एस.डी. मेस्कालाइन, फेनसाइक– लडाइन पेसी– लोसाइबिन	मुँह से, सुई द्वारा	मन परिवर्तन उदासी, चेतना में ऊँची उड़ान मतिभ्रम	अवसाद मानसिक रोग पूर्व दृश्य	केवल मानसिक प्रत्याहार, संलक्षण शारीरिक प्रत्याहार लक्षण नहीं	निम्न
6.	देवकली, माँग (Cannabis) गांजा, चरस,	धुम्रपान सुई द्वारा	सुख बोध, दिल की तेज धड़कन, चेतना में वृद्धि चेतना में सक्रियता	थकान संभ्राति, मनोविकृति	चिंता अनिंद्रा	निम्न

- **यद्यपि शराब उत्तेजक होती है किंतु अधिक मात्रा में लेने से अवसादकारी होती है।**

प्रभावों के अनुसार मादक द्रव्यों का वर्गीकरण

केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर मादक द्रव्यों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है :

क) **स्वापक पीड़ानाशक :** यह मादक द्रव्य पीड़ानाशक होते हैं और स्नायु तंत्र को गतिहीन कर देते हैं। चिकित्सा के लिए अफीम तथा अफीम से बने या कृत्रिम विकल्प जो अफीम की तरह प्रभावी होते हैं।

ख) **उत्तेजक :** ये वे मादक द्रव्य होते हैं जिनसे केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में उत्तेजना या सक्रियता में वृद्धि होती है। इन्हें ॲपर्स (Uppers) के नाम से भी जानते हैं।

ग) **शमक (अवसादकारी) :** ये वे मादक द्रव्य होते हैं जो केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली के कार्यों को धीमा करते हैं। वे शांत या निद्रा देने में सहायता करते हैं। इनमें से कई मादक द्रव्य मानसिक रोगों के इलाज के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

घ) **मतिभ्रमकारी :** ये वे मादक द्रव्य होते हैं जो नाटकीय ढंग से चिंतन, धारणाओं, मनोभावों और मानसिक प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इनका प्रयोग करने वाले लोग उतावलापन, भ्रम, शंका, चिंता और नियंत्रण का अभाव अनुभव कर सकते हैं।

उत्पत्ति के अनुसार वर्गीकरण

मादक द्रव्य की उत्पत्ति के अनुसार प्राकृतिक, अर्ध-कृत्रिम, कृत्रिम और बनावटी मादक द्रव्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है :

क) **प्राकृतिक मादक द्रव्य :** ये प्राकृतिक मादक द्रव्य होते हैं जैसे– अफीम, भांग, आदि। इन मादक द्रव्यों के उत्पादन में किसी तरह की रासायनिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती।

ख) **अर्ध कृत्रिम मादक द्रव्य :** ये मादक द्रव्य प्राकृतिक मादक द्रव्य में कुछ रसायनों की सहायता से प्रयोगशालाओं में तैयार किए जाते हैं। हेरोइन, शराब आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

ग) **कृत्रिम मादक द्रव्य :** ये मादक द्रव्य प्रयोगशाला में गैर-जैविक सामग्री से तैयार किए जाते हैं। ई.जी., मेथाडान, बारबीटेट्स आदि।

घ) **डिजाइन (बनावटी) मादक द्रव्य** : यहाँ पर इनके बारे में बताना बहुत आवश्यक है क्योंकि ये बहुत ही नशीले मादक द्रव्य होते हैं। ये मुख्य रूप से कृत्रिम मादक द्रव्य होते हैं तथा गैर-कानूनी तरीके से निर्मित किए जाते हैं। ये बनावटी मादक द्रव्य किसी व्यक्ति की माँग पर तैयार किए जाते हैं जो किसी अवैध मादक द्रव्य को बनाना चाहता है। उनका ऐसा निर्माण और अवैध व्यापार दण्डनीय अपराध है जो उन मादक द्रव्यों को बनाने में प्रयोग किए जाते हैं में शामिल नहीं होते जिनका प्रयोग और निर्माण निषेध नहीं होता है। इसमें मूल प्रक्रिया में अणु संख्या जैसे द्रव्य सम्मिलित कर दिए जाते हैं। ई.जी., ईक्स्टेसी, कृत्रिम हेरोइन आदि।

शराब

अल्कोहल अरबी शब्द अल-कुहुल से बना है जिसका अर्थ है अच्छी तरह विभाजित आत्मा। यह प्रायः खमीर उठे स्टॉर्च से बनाई जाती है और यद्यपि आरंभ में जोश प्रदान करती है लेकिन यह मंदकारी है। शराब के अनेक प्रकार होते हैं। इथाइल शराब का प्रायः सेवन होता है। अधिकतर अल्कोहल पेय जैसे कि व्हिस्की, जिन, रम, आदि में 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक अल्कोहल होता हे। देशी शराब में (स्थानीय कारखानों में बनी) अल्कोहल की मात्रा 65 प्रतिशत तक होती है।

मिथाइल शराब रसायन प्रक्रिया द्वारा लकड़ी से बनाई जाती है। इसका औद्योगिक कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। यह जहरीली होती है और हम इसके साक्षी हैं कि मिथाइल शराब पीकर असंख्य लोग बेमौत मरते हैं।

यद्यपि अल्कोहल मस्तिष्क में पहुँचने में कुछ मिनट लेता है लेकिन एक गिलास (350 मि.लि.) वाइन या नियमित बीयर बनने के लिए लिवर को इसका विखंडन करने में एक घंटा लगता है।

शराब कितनी तेजी से हमारे शरीर को प्रभावित करती है यह अनेक घटकों पर निर्भर करता है।

- पीने की गति
- प्रयोग करने वाले के शरीर का वजन
- पेट में मौजूद भोजन की मात्रा
- शराब में अल्कोहल की मात्रा, और
- शराब पीने का अनुभव

एक मानक मात्रा हल्के बीयर (2.7% अल्कोहल) का 425 मि.लि., 285 मि.लि. नियमित बीयर (4.9% अल्कोहल), 100 मि.लि. वाइन (12% अल्कोहल) या 30 मि.लि. अरक (40-50% अल्कोहल) होती है।

शराब की आदत

शराब की उपयुक्त परिभाषा कीलर और इफ्फरान ने दी है जिसे अधिकतर लोग स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं शराब एक पुराना रोग है जो मानसिक, दैहिक, या मानसिक दैहिक होता है जिसकी अभिव्यक्ति मनुष्य के व्यवहार में विकार होने से प्रकट हो जाती है। शराब को लगातार पीना इसकी विशेषता है जो कि सामाजिक रीति-रिवाजों, आहार नियमों या समुदाय के सामाजिक अवसरों पर सेवन की मात्रा से भी इतनी अधिक हो जाती है कि इसका प्रभाव सीधा शराब पीने वालों के स्वास्थ्य, समाज तथा आर्थिक व्यवस्था पर भी पड़ता है।

एक व्यसनी और सामाजिक स्तर पर शराब पीने वाले के मध्य एक अंतर होता है। इस अंतर को मार्टीमान ने इस प्रकार स्पष्ट किया है कि एक शराबी के कारण उसके जीवन क्षेत्र में एक या उससे अधिक समस्याएँ बनी रहती हैं। जबकि एक सामाजिक रूप से शराब पीने वाला अपने उस दायरे या सीमाओं में पीता है जिसे उसके सामाजिक समूह ने अनुमति दी हुई है। सामाजिक रूप से शराब पीने वाला व्यक्ति न तो अपने जीवन में और न ही समाज में किसी प्रकार की समस्या पैदा करता है।

शराब सेवन की स्थिति

आरंभिक स्थिति

- **सहन शक्ति में वृद्धि :** वांछित प्रभाव पैदा करने के लिए व्यक्ति को और अधिक शराब की आवश्यकता होती है।
- **चेतना शून्य हो जाना :** कुछ समय के लिए पूरी तरह से स्मरणशक्ति समाप्त हो जाती है। जबकि अन्य शारीरिक और मानसिक क्रियाकलाप सामान्य रूप से होते रहते हैं।
- **शराब पीने में ध्यान मग्नता :** व्यक्ति हमेशा और अधिक पीने के बारे में सोचता है।
- शराब पीने से संबंधित किसी भी प्रकार की चर्चा करना नहीं चाहता।

मध्य स्थिति

- **नियंत्रण खोना :** व्यक्ति शराब की मात्रा, पीने का स्थान और पीने के समय के संबंध में अपना नियंत्रण नहीं रख सकता।
- **मद्यपान को उचित सिद्ध करना :** व्यक्ति शराब पीने के नए-नए बहाने बनाने और उसे तर्कसंगत बनाने का प्रयास करता है।
- **आक्रामक होना :** शराबी यह मानने लगता है कि अन्य लोग उसके लिए समस्याएँ पैदा कर रहे हैं। इसलिए वह दूसरों को गाली देने और हाथापाई करने लगता है।
- **शान-शौकत का व्यवहार करना :** अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने और अपनी गलतियाँ को छिपाने के लिए और डींगे मारने लगता है तथा अपने मित्रों और परिवार पर बेहद खर्च करता है।
- **मद्यपान तरीके में परिवर्तन करना :** ऐसा करके वह दिखाना चाहता है कि वह शराब पीने पर नियंत्रण कर सकता है। व्यक्ति पीने के तरीकों, स्थान को बदल सकता है और कुछ समय के लिए मदिरापान बंद कर सकता है।
- **लगातार मदिरापान करना :** रक्त में मदिरा स्तर को बनाए रखने के लिए लगातार शराब पीना ताकि शराब त्यागने के संलक्षण रोके जा सकें।

चिरकालिक स्थिति : कुछ दिनों के लिए लगातार भरपूर प्रयोग करके कुछ दिनों तक संयम रखने का प्रयास करेगा।

संभ्रान्ति : व्यक्ति प्रत्येक के लिए शंकालू बन जाता है। उसे भ्रांति हो जाती है। उसे लगता है कि कुछ लोग उसे मारने का षड्यंत्र कर रहे हैं।

तंबाकू

संक्षिप्त इतिहास : अंग्रेज अन्वेषक वाल्टर रैलिय ने 1592 में पश्चिम में **तम्बाकू** को लोकप्रिय बनाया। वहाँ से पूरे विश्व में **तम्बाकू** की प्रसिद्धि फैल गई। उसने देखा कि आदिवासी लोग आनंद के लिए सूखे तम्बाकू को कैसे काटते और धूम्रपान करते हैं।

तम्बाकू क्या है? तम्बाकू में मानव द्वारा ज्ञात सर्वाधिक विष निकोटीन नामक तत्व होता है। शुद्ध या मूल रूप वाले निकोटीन से मनुष्य एक मिनट में मर सकता है। सिगरेट का धुंआ रक्त प्रवाह में अवशोषित हो जाता है क्योंकि धुंआ क्षार होता है अतः मुँह की लार में घुलने से रक्त में प्रवाहित होने के कारण अंत में मस्तिष्क में पहुँच जाता है। निकोटीन शारीरिक और मानसिक रूप से हेरोइन से अधिक व्यसनकारी है। यह अन्य किसी भी अन्य अवैध मादक द्रव्य की तुलना में सबसे अधिक व्यक्तियों के प्राण लेती है। 2004 में वॉकाहर्ट चिकित्सालय, भारत में 5000 रोगियों पर किए गए अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 40 से अधिक हृदय रोगी धूम्रपान करते थे। प्राचीन धूम्रपान सहित धूम्रपान रक्त में ले जाई जाने वाली ऑक्सीजन की मात्रा कम करने के द्वारा हृदय के कार्य को कठिन बना देता है क्योंकि प्रत्येक कश के साथ कार्बन मोनोक्साइड तथा अन्य गैसें ऑक्सीजन को कम कर देती है।

2004 में अमेरिका के प्रमुख शल्य चिकित्सक की जारी रिपोर्ट कहती है कि पहले के ज्ञात लोगों से अधिक संख्या में रोगी धूम्रपान करते थे। रोगों में शामिल है मोतिया बिंद, निमोनिया, अमाश्य, अग्नाश्य, गुर्दे और गर्भाशय का कैंसर। पहले से धूम्रपान करने वालों में माता के दूध और बच्चों में अचानक शिशु मृत्यु लक्षणों की तुलना में दो गुणा निकोटीन पाए जाने की संभावना होती है। धूम्रपान करने वाली महिलाओं की औसत आयु 14.5 वर्ष तथा पुरुषों की आयु 13.2 वर्ष कम हो जाती है। ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की 2004 की रिपोर्ट बताती है कि 120,00 युवकों की नपुंसकता का कारण निकोटीन पाया गया। कम वजन के पैदा होने वाले बच्चों का कारण भी माता-पिता द्वारा धूम्रपान से संबंधित है। दीर्घावधि तक धूम्रपान करने वाली महिलाओं में गर्भधारण के अवसर धूम्रपान न करने वाली महिलाओं की तुलना में 10.40% कम हो जाते हैं।

मादक द्रव्य में छल-कपट : मादक द्रव्यों का व्यापार गैर-कानूनी होता है। इसमें भयानक धोखा और छल-कपट हो सकता है जिसमें अत्यधिक ठगी और हत्या तक भी हो सकती है। इसमें अनापेक्षित या नशीला प्रभाव भी मिलाया जा सकता है जो बहुत घातक हो सकता है। इनमें से कुछ निम्नलिखित छल-कपट के व्यवहार हो सकते हैं :

क) **अवमिश्रण (घटिया करना) :** यह मात्रा के बढ़ाने के लिए कुछ क्रियाशील रसायनों का मिश्रण कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप वजन में कमी हो जाती है। इस प्रक्रिया को कम (कट) करना कहते हैं। मिश्रण करते समय उसमें आटा, चीनी, चाक मिट्टी आदि मिलाई जाती हैं।

ख) **अपमिश्रण :** मादक द्रव्य को कम करने के लिए उसमें कुछ सक्रिय वस्तुओं की मिलावट कर दी जाती है। हेरोईन में चूहे मारने वाला जहर मिलाया जा सकता है और कोकेन की मात्रा में वृद्धि के लिए बारबीट्रेट्स को मिश्रित कर देते हैं।

ग) **वैकल्पिक :** यह स्पष्ट ठगी या धोखा होता है जब किसी मूल्यवान रसायन के नाम पर दूसरा रसायन बेचा जाता है। अर्थात् बनावटी हेरोइन को शुद्ध हेरोईन के नाम से बेच दिया जाता है।

लक्ष्य समूह

अनुसंधान से पता लगता है कि अभिभावक जितना समझते हैं बच्चों में उससे दस गुणा अधिक मादक द्रव्य लेने की लत है। इसके अतिरिक्त अनेक विद्यार्थी जानते हैं कि उनके मादक द्रव्य प्रयोग की मात्रा के बारे में उनके माता-पिता या अभिभावकों को पता नहीं चलेगा और वे विश्वास करने लगते हैं कि वे बिना किसी दण्ड के आसानी से मादक द्रव्य का सेवन कर सकते हैं (यू.एस. शिक्षण विभाग)।

यहाँ तक कि भारत में भी मादक द्रव्य विद्यालय परिसर तक पहुँच चुका है। एक दशक पहले पश्चिम में मादक द्रव्य सेवन एक समस्या थी। आज यह विकासशील देशों में फैल गई है

जहाँ पर विश्व के 20 प्रतिशत मादक द्रव्य व्यसनी हैं। लगभग सभी महानगरों के विद्यालयों, कॉलेजों और शिक्षा संस्थानों में मादक द्रव्य के व्यसनी मौजूद हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार के लिए बदनाम हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग वाले अति संवेदनशील समूह निम्न प्रकार हैं :

अधिकतर मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले लोग छोटी उम्र, अर्थात् किशोरावस्था या इससे पहले ही मादक द्रव्य का सेवन करना आरंभ कर देते हैं। मित्रों का प्रभाव इसमें निर्णायक सिद्ध होता है। मादक द्रव्य प्रयोग विद्यालय की समस्या है क्योंकि विद्यार्थी की शैक्षिक योग्यता को कम माना जाता है। इसके परिणामस्वरूप विद्यालयों के विद्यार्थी अपनी-शिक्षा को अधूरी छोड़कर चले जाते हैं जिसकी दर काफी ऊँची है।

मादक द्रव्य समस्या सम्पूर्ण विद्यालय को अस्तव्यस्त कर देती है। यह विद्यार्थियों के चरित्र को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त मादक द्रव्य विद्यालय में गैर-कानूनी वातावरण बना देते हैं जैसे कि मादक द्रव्य का सेवन, मादक द्रव्य का अवैध व्यापार, चोरी, अपराध यहाँ तक कि वेश्यावृत्ति भी इसमें शामिल है।

1) **आवारा बच्चे :** भारत में आवारा बच्चों की बहुत बड़ी संख्या है। ये कूड़े-कचरे में से कबाड़ उठाना, जूतों की पॉलिस करना, छोटे कारखानों और दुकानों में काम करके अपना जीवनयापन करते हैं।

   बच्चों द्वारा सामान्यतः प्रयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य हैं– तम्बाकू, कच्ची शराब, ब्राउन शुगर, भांग, गेसोलीन, ग्लू, पेंट, थिनर और मिट्टी का तेल (सूंघना)। इनमें से कुछ घातक मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं और अंतःशिरा मादक द्रव्य व्यसन की अंतिम सीमा पर पहुँच जाते हैं।

   हाल में ही एक अध्ययन किया गया जिसमें साक्षात्कार में शामिल बच्चों में से 75 प्रतिशत बच्चे नियमित रूप से शराब का सेवन करते हैं इनमें से 25 प्रतिशत तो प्रतिदिन शराब पीते हैं।

   बड़े व्यक्ति और गिरोह इन बच्चों से अनैतिक रूप से फेरी लगाने का काम करवाते हैं अर्थात् इनसे अनैतिक व्यापार करवाते हैं।

2) **कामगार :** व्यसन का अति संवेदनशील अन्य समूह है श्रमिक वर्ग। इसमें लम्बी दूरी पर चलने वाले ट्रक डाइवर, दैनिक दिहाड़ी मजदूर, विशेषकर अप्रवासी श्रमिक जो अपने घरों से दूर रहते हैं, शामिल हैं। इस समूह पर मादक द्रव्य का प्रभाव हमारी कल्पना से परे है। इनकी यह लत कार्यक्षमता को कम करती है, उत्पादन को हानि होती है, यातायात दुर्घटनाएँ होती हैं और स्वास्थ्य देखभाल की लागत में वृद्धि होती है।

3) **खेल कार्मिक :** कुछ ऐसे रसायन हैं जो एथलीटों की गति या उनके खेल प्रदर्शन में सुधार ला सकते हैं। चीन तथा पूर्वी जर्मनी ने स्वीकार किया है कि वे खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते समय इस तरह के रसायनों का प्रयोग करते थे। हो सकता है कि इस तरह की नशीली दवाएं लेने से खिलाड़ियों में इनकी आदत न पड़े। परंतु व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अवश्य ही बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ खिलाड़ी कोकेन जैसे उत्तेजक नशीले पदार्थ लेते हैं ताकि उनके खेल प्रदर्शन में सुधार हो।

4) **कलाकार :** सृजन तथा मनःस्थिति बदलने वाले ड्रग्स में विशेष रूप से संबंध है। संगीत, कला और कविता आदि सृजनात्मक क्षेत्र हैं। हाल के दिनों में कोलम्बिया केंद्र में व्यसन तथा द्रव्य दुरुपयोग के लिए 12 से 17 वर्ष के बच्चों का अध्ययन किया गया जिसमें 76 प्रतिशत बच्चों ने बताया है कि मनोरंजन उद्योग गैर-कानूनी ड्रग दुरुपयोग को

प्रोत्साहित करता है। ड्रग महामारी प्रसिद्ध संस्कृति विशेषकर रोंक संगीत के द्वारा अधिक तेजी से फैलती है। कुछ प्रसिद्ध रॉक संगीत सितारे ड्रग की मोहकता और चकाचौंध का प्रचार करते हैं।

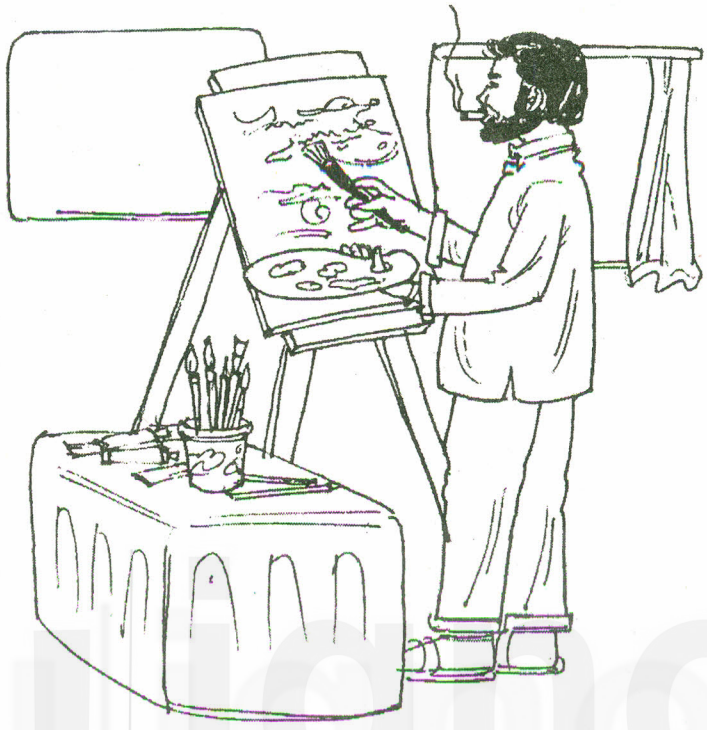

कुछ प्रसिद्ध लेखक और कवि रसायनों से प्रभावित रहे हैं। वे अधिक सृजनातम्क लेखन कार्य के लिए अतः स्थिति परिवर्तनकारी नशीले पदार्थों का सेवन करते थे।

5) कुछ व्यक्ति जो एक ही काम रोज करते हैं वह नीरस और उबाऊ होता है। इस समूह में ड्राइवर, कानून को लागू करने वाले अधिकारी, रक्षा कार्मिक शामिल है। इनके कार्यों में शारीरिक दबाव, व तनाव अत्यधिक होता है ये लोग कार्य करने के लिए शराब का सेवन करने लगते हैं तथा कुछ मामलों में वे ड्रग्स पर निर्भर हो जाते हैं।

विभिन्न समूहों का अध्ययन करने के पश्चात् हमें पता चला है कि लोग विभिन्न कारणों से मादक द्रव्य का सेवन करते हैं। यह स्पष्ट होता है कि ड्रग्स सेवन के पीछे कोई एक कारण नहीं है और न ही यह किसी वर्ग विशेष अथवा विशेष लोगों से संबंधित है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबधित कुछ सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित गलत धारणाएँ

मिथकों या धारणाओं पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है परंतु वास्तव में ये गलत होती हैं। साधारण लोग मादक द्रव्य के विषय में कुछ समझ नहीं पाते और न ही उनके प्रभावों को जानते हैं। मादक द्रव्य से संबंधित गलत धारणाओं के कारण बहुत लोग मादक द्रव्य के व्यसनी बन जाते हैं। आइए इनमें से कुछ के बारे में चर्चा करें :

1) **केवल कमजोर व्यक्ति ही मादक द्रव्य का व्यसनी बनता है**। वास्तव में तथ्य इसके विपरीत हैं, व्यसनी बहुत कमजोर हो जाता है। कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्य का सेवन करना व्यसनी बनने के लिए नहीं करता। जैसे कि हमने देखा है लोग मादक द्रव्य का विभिन्न कारणों से सेवन आरंभ करते हैं। आरंभिक स्थिति में भी उनकी इच्छा शक्ति बहुत शक्तिशाली होती है जबकि उनके पास मादक द्रव्य आने लगते हैं। मादक द्रव्य का सेवन करने वाला व्यक्ति अपनी आदत को बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार का जोखिम उठा सकता है।

   इसके अतिरिक्त इच्छा शक्ति प्रेरणा पर भी निर्भर करती है और प्रेरणा प्राथमिकता पर निर्भर करती है। किसी व्यसनी के लिए सबसे पहली प्राथमिकता है मादक द्रव्य प्राप्त करना क्योंकि यह उसकी सभी समस्याओं का समाधान कर देती है। अतः व्यसनी किसी भी अन्य वस्तु को छोड़कर सबसे पहले रसायन यानि कि मादक द्रव्य लेना पसंद करेगा।

2) **मादक द्रव्य मानसिक और शारीरिक शक्ति प्रदान करते हैं**। इसलिए वह मादक द्रव्य व्यक्ति की तर्क शक्ति में परिवर्तन कर देता है। मादक द्रव्य के प्रभाव में वह ऐसा कार्य भी कर देगा जो उसके बिना नहीं कर सकता। दूसरा तथ्य यह है कि व्यक्ति जो शक्ति प्राप्त करता है वह केवल थोड़े समय के लिए ही होती है। मादक द्रव्य उसको थोड़े समय के लिए ही अवरोधों एवं भय पर नियंत्रण करा सकता है तथा वह स्वयं को एक साहसी व्यक्ति मानने लगता है।

3) **मनोरंजन के लिए मादक द्रव्य का प्रयोग करना हानिकारक नहीं है**। सभी गैर-कानूनी मादक द्रव्य हानिकारक हैं। वे प्रयोगकर्त्ता में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन लाते हैं। अधिक दिनों तक मादक द्रव्य का प्रयोग करने से व्यक्ति व्यसनी बन जाता है। इसके अतिरिक्त मादक द्रव्य महंगे होते हैं। मादक द्रव्य व्यक्ति को शारीरिक रूप से अशक्त और आर्थिक दृष्टि से निर्धन बना देते हैं। यह व्यसन मादक द्रव्य के अवैध व्यापार को बढ़ावा भी देता है।

4) **सभी लोग मादक द्रव्य का प्रयोग करते हैं**। सच यह है कि इस तरह के तर्क वे ही देते हैं जो मादक द्रव्य के व्यसनी हैं। वे चाहते हैं कि लोग उनके व्यवहार को स्वीकार कर लें। यहाँ तक कि यदि यह मान भी लिया जाए कि बहुत सारे लोग मादक द्रव्य का सेवन करते हैं परंतु यह भी सच है कि अत्यधिक लोग मादक द्रव्य का प्रयोग नहीं करते। साथियों के दबावों का सामना करना कठिन होता है। सही के समक्ष खड़ा होने और मादक द्रव्य व्यसन का प्रतिरोध करने के लिए और अधिक साहस और शक्ति की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति मादक द्रव्य का सेवन नहीं करता।

5) **मादक द्रव्य जीवन की असफलताओं, दुख भरी घटनाओं को भुलाने में सहायता करते हैं**। सच है कि यह व्यसनी की उतने समय ही सहायता करता है जब तक उस रसायन का प्रभाव रहता है। यह प्रभाव एक घंटे से तीन घंटे तक की अवधि तक रहता है।

यह थोड़े समय के लिए अपना प्रभाव छोड़ता है। यह उसी तरह है जैसे कि किसी जीवित व्यक्ति को कब्र में दफनाना और कहना कि कल प्रेतात्मा आएगी और आपको तंग करेगी।

6) **मादक द्रव्य समकक्ष समूह स्तर को बनाए रखने में सहायता करते हैं**। किंतु सत्य यह है कि समान, समकक्ष का कोई स्तर होता ही नहीं। वे सभी लोग जो पीते हैं वे इसलिए पीते हैं क्योंकि वे पीना नहीं छोड़ सकते। वे इसे बंद करना चाहते हैं किंतु ऐसा नहीं कर सकते। समान समूह स्तर का सीधा संबंध अवास्तविक और अस्वास्थ्यकर होता है।

7) **मादक द्रव्य आपकी एकाग्रता में सुधार करता है**। सत्य यह है कि यह उसी प्रकार है कि उधार लेकर त्यौहार मनाना। मादक द्रव्य आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता में वृद्धि कर सकते हैं परंतु यह भी सत्य है कि बाद में वे आपकी मस्तिष्क की कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं। दीर्घावधि तक कार्य या अध्ययन की आवश्यकता वाले श्रमिक या छात्र मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। लेकिन उनमें से अधिकतर इनके आदी हो जाते हैं और युवावस्था में मर जाते हैं। कवि बायरन बहुत प्रसिद्ध अंग्रेज कवि था लेकिन वह शराब का व्यसनी था जो 30 वर्ष की उम्र में ही मर गया।

इसलिए अब आवश्यकता इस बात की है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में प्रचलित सभी प्रकार की अवधारणाओं का उत्तर दिया जाए।

2.6 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य है कि आप मादक द्रव्य दुरुपयोग के तथ्यों से अवगत हो जाएँ। अब आप इनके उपयोग और दुरुपयोग में अंतर करने में समर्थ हो गए हैं। आप विभिन्न कारणों से लोगों द्वारा दुरुपयोग करने के संबंध में चर्चा कर सकते हैं। आप यह समझ गए हैं कि विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य होते हैं, उनमें क्या अंतर है और किस प्रकार से हमारे शरीर के हिस्सों को वे प्रभावित करते हैं। यह भी जान गए हैं कि मादक द्रव्य विभिन्न प्रकार से तैयार किए जाते हैं। आपने यह भी जाना होगा कि ड्रग्स के दुरुपयोग में कितने कानूनी पक्ष हैं। विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य को विभिन्न प्रकार के लोग इस्तेमाल करते हैं। हमने मादक द्रव्य के प्रभावों के बारे में गलत अवधारणाओं पर भी चर्चा की है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में फैले गलत मिथकों, अवधारणाओं को भी समझा है। मादक द्रव्य का दुरुपयोग इसलिए होता है कि इसके संबंध में गलत धारणाएँ प्रचलित हैं कि इनका शरीर और मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

2.7 शब्दावली

मादकता (नशीलापन) : व्यसन और निर्भरता का कारण।

नीरसता (ऊबाऊ) : नीरसता की स्थिति, किसी भी लाभदायक कार्य में रुचि न होना।

भाँग : भाँग का पौधा, गांजा।

एथाइल अल्कोहल : एथाइल एक रंगहीन तरल पदार्थ होता है जो नशीला होता है और शराब और बीयर में एक नशीले पदार्थ के रूप में मिश्रित किया जाता है।

समकक्ष समूह का दबाव : समान आयु समूह, व्यवसाय और सिद्धांत वाले व्यक्तियों का दूसरों पर उन्हीं की तरह व्यवहार करने का प्रभाव।

आत्म-प्रतिष्ठा होना : अपने बारे में ऊँचे विचार रखना।

2.8 कुछ उपयागी पुस्तकें

टी.टी. रंगनाथन (1989), *अल्कोहोलिज्म एंड ड्रग डिपेंडेंस,* क्लिनिकल रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई।

यू एन डी सी पी (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट,* दक्षिण एशिया का क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

इरा मोदनर एंड एलन विट्ज, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स,* पैंगुईन बुक्स, लंदन।

जॉन चंकपुरा (1994), *ट्रिटमेंट मॉड्लस इन एडिक्शन,* टी आर ए डी ए, कोट्टायम।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए केवल एक कारण नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधानकर्ताओं ने मादक द्रव्य दुरुपयोग को स्पष्ट करते हुए विभिन्न उत्तर दिए हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग का सीधा संबंध व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक वातावरण से जुड़ा है। व्यक्ति क्यों मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करता है, इसके कुछ कारण हैं और वह क्यों मादक द्रव्यों का दुरुपयोग जारी रखता है, इसके अन्य कारण हैं।

बोध प्रश्न II

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबधित तीन सिद्धांत हैं जिन्हें हम तीन समूहों में विभाजित करते हैं।

   क) **शारीरिक सिद्धांत** : ये स्पष्ट करते हैं कि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक शारीरिक समस्या है। एक व्यक्ति अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मादक द्रव्य का दुरुपयोग करता है। इसमें पोषण की कमी हो सकती है। अथवा शरीर के एजेर्जिक प्रतिक्रिया के कुछ प्रकारों का परिणाम है।

   ख) **मनोवैज्ञानिक सिद्धांत** : मनोवैज्ञानिक सिद्धांत मुख्य रूप से व्यसनी के व्यवहार पर प्रकाश डालता है। व्यसनी एक प्रकार का व्यक्तित्व होता है जो पहले से ही व्यसन के लिए तैयार होता है। यह पूर्व निर्धारण प्रायः मनुष्य के बचपन के अनुभवों का परिणाम होता है।

   ग) **सामाजिक सिद्धांत** : किसी एक व्यक्ति का व्यवहार और आचरण उसके समाज से प्रभावित होता है जहाँ पर वह रहता है या उससे संबंध रखता है। यदि समाज मादक द्रव्य के प्रति अपना मोह या आकर्षण रखता है तो व्यक्ति भी आसानी से मादक द्रव्य का सेवन करने लगेगा। कोई भी समाज अपने स्थापित मानदण्डों से मादक द्रव्य दुरुपयोग को प्रोत्साहित अथवा निरुत्साहित कर सकता है।

इकाई 3 भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार का विस्तार

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 सामाजिक समस्या के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग

3.3 मादक द्रव्य का अवैध व्यापार

3.4 अवैध मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित तथ्य और आँकड़े

3.5 विभिन्न समूहों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

3.6 सारांश

3.7 शब्दावली

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले विभिन्न समूहों से परिचय कराने में सहायता करेगी। मादक द्रव्य दुरुपयोग विभिन्न वर्गों के लोगों को उनके जातीय समूहों, व्यवसाय, आयु, लिंग आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से प्रभावित करता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- किस प्रकार से अनेक वर्ग तथा सामाजिक समूह मादक द्रव्य दुरुपयोग से प्रभावित होते हैं इसका अंतर कर सकेंगे;
- मादक दव्य के अवैध व्यापार के विस्तार तथा क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे; तथा
- मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के परिणामों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

हमारा यह अनुभव है कि एक महामारी क्षेत्र के सभी लोगों को समान रूप से प्रभावित नहीं करती है। उदाहरण के लिए मलेरिया और टी.बी. निर्धन वर्ग के लोगों को अधिक प्रभावित करते हैं। इसी तरह से हृदय रोग महिलाओं से अधिक पुरुषों को प्रभावित करता है। ऐसे ही मादक द्रव्य दुरुपयोग विभिन्न अंशों में भारत के लोगों को प्रभावित करता है। हमने देखा है कि सबसे अधिक व्यसन युवाओं और शहरी लोगों में व्याप्त है। हमें यह भी पता लगा है कि कुछ जातीय समूह अन्य लोगों की तुलना में मादक द्रव्य दुरुपयोग के मामले में अधिक सुभेद्य और असुरक्षित हैं।

इसी प्रकार मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का प्रचलन भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में कुछ क्षेत्रों में अधिक है। इस विस्तार की भिन्नता के कारण भौगोलिक तथा राजनीतिक हैं। इस इकाई में मादक द्रव्य दुरुपयोग, मादक द्रव्य का अवैध व्यापार तथा इससे संबंधित विभिन्न समूहों का विस्तार से वर्णन और उसका विश्लेषण किया जाएगा।

3.2 सामाजिक समस्या के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग

सामाजिक समस्या उस व्यवहार के कारण होती है जो समाज को संकट में डालता है अथवा उन समूहों और संस्थाओं को जोखिम में डालता है जिनसे समाज का निर्माण हुआ है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि समाज में एक वर्ग के लोगों के व्यवहार व आचरण के कारण सामाजिक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। समाज में ऐसे लोगों का व्यवहार न स्वयं उनके लिए और न ही सम्पूर्ण समाज के लिए उपयोगी होता है। भूकम्प या बाढ़ सामाजिक समस्या नहीं हैं, परंतु अपराध, निरक्षरता आदि सामाजिक समस्याएँ हैं। इन दोनों में यह अंतर है कि एक समस्या स्वयं मनुष्य द्वारा बनाई गई है जबकि दूसरी समस्या प्राकृतिक है।

प्रत्येक समाज के अपने-अपने नियम और कानून बने होते हैं जिनसे वे हत्या, बलात्कार, डकैती, चोरी आदि कार्यों पर प्रतिबंध लगाते हैं। यह नियम, कानून या मानदण्ड समाज के कार्यों को सुचारू रूप से पूरा करने और प्रगति करने में सहायक होते हैं। जब कुछ लोगों का समूह इन नियमों के विरुद्ध चलने लगता है तो समाज के अन्य सदस्यों के लिए शान्ति से रहना कठिन हो जाता है।

मानव इतिहास मादक द्रव्य दुरुपयोग का भी इतिहास रहा है। आरंभिक काल से जड़ी-बूटियाँ, जड़ें, छालें और पौधे पीड़ानाशक और रोग नियंत्रण के लिए प्रयोग किए जा रहे हैं। इस प्रकार मादक द्रव्य के प्रयोग में कोई बुराई नहीं है। मादक द्रव्य का उचित उपयोग किया जाए तो चिकित्सा के लिए वरदान माना जाता है। पिछले दो दशकों के दौरान मादक द्रव्य का गैर-कानूनी इस्तेमाल होने लगा है और इसका प्रसार खतरे की दर तक पहुँच गया है तथा विश्व के सभी हिस्सों में व्याप्त हो गया है।

मादक द्रव्य समस्या सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। "मादक द्रव्य दुरुपयोग को अधिक दिनों तक अपराधी रहित अपराध नहीं माना जा सकता। यह एक ऐसा अपराध है जो लोगों और विश्व के राष्ट्रों पर डगमगा देने वाला भार है। यह एक ऐसा भार है जिसे कोई समाज नहीं झेल सकता। मादक द्रव्य का गैर-कानूनी उत्पादन, वितरण और उपभोग एक भयानक मामला है तथा लोक सेवकों को भ्रष्ट बना रहा है, यहाँ तक कि इससे सरकारें भी अस्थिर हो जाती हैं। मादक द्रव्य धनराशि की अनियमितता, प्रवाह और अत्यधिक मात्रा में धन आपूर्ति और मुद्रा विनिमय बाजारों को प्रभावित करती हैं (यू.एन. रिपोर्ट, 1992)।"

मादक द्रव्य दुरुपयोग संपूर्ण विश्व समाज की समस्या है। यह किसी एक राष्ट्र या महाद्वीप तक सीमित नहीं है। यह एक सामाजिक समस्या है जो कि आतंकवाद, कालाधन, हथियारों का व्यापार और हत्याओं के स्रोतों को जन्म देती है। इसके अधिकतर शिकार मासूम नागरिक होते हैं।

मादक द्रव्य और हथियारों के व्यापार करने वाले समूह इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गई सरकारों को गिराने में समर्थ होते हैं। इस तरह की घटनाएँ दक्षिणी-अमरीका, सिसली और अफगानिस्तान में हो चुकी हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) क्या मादक द्रव्य दुरुपयोग सामाजिक समस्या है।

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार

मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार इसकी गैर-कानूनी बिक्री तथा परिवहन है जो देश के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में या एक देश से दूसरे में किया जाता है। परस्पर संबधित समूहों का व्यापक नेटवर्क होता है जो अवैध मादक द्रव्य उत्पादन, परिवहन में आधुनिक प्रौद्योगिकी के रूप का इस्तेमाल करते हैं जिससे अवैध मादक द्रव्यों का व्यापार किया जाता है। ये लोग हथियारों से लैस होते हैं जिनसे ये अपनी रक्षा करते हैं और डराते-धमकाते हैं। इसलिए ये लोग बहुत ही खतरनाक हो सकते हैं।

इनकी पद्धतियाँ बहुत ही विशिष्ट और जटिल होती हैं जिसमें मादक द्रव्य की अनेक किस्में होती हैं जो सम्पूर्ण विश्व में अनेक प्रकार के स्रोत से प्राप्त होती हैं। "यह मादक द्रव्य का अवैध व्यापार केवल राष्ट्रीय मादक द्रव्य कानूनों तथा अंतर्राष्ट्रीय परंपराओं का ही उल्लंघन नहीं करते हैं बल्कि धोखाधड़ी, षड्यंत्र, रिश्वत तथा लोक अधिकारियों को भ्रष्ट बनाना, कर बचाना, बैंक कानूनों का उल्लंघन करना, गैर-कानूनी धन हस्तांतरण, आयात/निर्यात के कानूनों का उल्लंघन, हिंसा-अपराध तथा आतंकवाद के साथ अनेक आपराधिक गतिविधियों में भी शामिल होते हैं।"

विश्व में मादक द्रव्य के अवैध व्यापार में वृद्धि क्यों हो रही है? इसके अनेक कारण हैं। पहला कारण है स्वापक मादक द्रव्य की माँग में वृद्धि। दूसरा कारण है कुछ मादक द्रव्य प्राकृतिक पौधों से प्राप्त होते हैं जैसे कि अफीम, पोस्त और कोकाबुस आदि जबकि अर्ध-कृत्रिम मादक द्रव्य जैसे कि हेरोइन और कोकेन को रासायनिक कारखानों में तैयार किया जाता है। ये कारखाने विकसित देशों में उच्च प्रौद्योगिकी से सम्पन्न होते हैं।

तीसरा कारण यह है कि कुछ देशों में बहुत दक्ष नियंत्रण व्यवस्था मौजूद है जबकि कुछ देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गैर-कानूनी मादक द्रव्य उत्पादन और उसके अवैध व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं। अधिकतर मादक द्रव्य का अवैध व्यापार बहुत ही गुप्त रूप से होता है। मादक द्रव्य उद्योग अरबों-रुपयों का व्यापार है। एक अनुमान के अनुसार इस उद्योग का वार्षिक कारोबार लगभग 1600 बिलियन रुपयों का है।

मादक द्रव्य के गैर-कानूनी व्यापार में वृद्धि हो रही है इसे ऐसे संगठित व्यक्तियों या समूहों द्वारा संचालित किया जाता है जिनका वित्त तथा संचालन पर नियंत्रण होता है लेकिन वे मादक द्रव्य से कोई संबंध नहीं रखते। प्रायः मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के एजेंट दक्ष अपराधी होते हैं। अपराधी इस क्षेत्र में लगातार संचालन करते रहते हैं क्योंकि इस व्यापार में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

मादक द्रव्य का अवैध व्यापार करने वाले समूहों को प्रायः माफिया के नाम से जाना जाता है। इनके पास उत्पादन और वितरण का बहुत ही दक्ष नेटवर्क होता है। वे बाजार की ओर सबसे अधिक माँग के क्षेत्रों की पहचान करते हुए विशिष्ट भौगोलिक स्थान में "रुचि के मादक द्रव्य" का पता लगाते हैं, जबकि सम्पूर्ण विश्व में स्वापक मादक द्रव्य का प्रसार-प्रवाह को बनाए रखते हैं।

माँग और आपूर्ति का साधारण नियम मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार के मामले में भी लागू होता है। एक व्यसनी के लिए मादक द्रव्य एक अत्यावश्यक वस्तु बन जाती है। आवश्यक वस्तुओं के लिए माँग कम नहीं होती है। यदि आपूर्ति में कमी आती है तो माँग कम नहीं होती किंतु मूल्य अधिक हो जाता है। जैसा कि हमने पूर्व अध्यायों में देखा है कि व्यसनी अपनी लालसा की पूर्ति के लिए मादक द्रव्य की मात्रा को अधिक से अधिक बढ़ाता रहता है। जब व्यसनी मादक द्रव्य के लिए खर्च करने में असमर्थ हो जाता है तो उसे अपने स्रोत खोजने पड़ते हैं और अंत में वह उस अवैध व्यापार में सम्मिलित हो जाता है। इस प्रकार वह व्यसनी होने के साथ-साथ अवैध व्यापार व्यवस्था से भी अपने संबंध स्थापित कर लेता है।

आपराधिक समूह मादक द्रव्य बेचने के लिए बच्चों का उपयोग करते हैं। कानून के अनुसार 12 वर्ष से कम आयु के बच्चे कोई भी अपराध करने पर दण्डित नहीं किए जा सकते। "ब्राजील में आवारा बच्चों का इस कार्य में अनुपात सबसे अधिक है। वे लोग मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के वाहक का काम करते हैं और स्वयं भी मादक द्रव्य का प्रयोग करने लगते हैं। कुछ बच्चों से अड़ोस-पड़ोस में मादक द्रव्य वाहक का काम करवाया जाता है। वे हवाई जिम्बो, "छोटे वायुयान" के नाम से जाने जाते हैं। उन्हें कुछ धन मिलता है जिससे वे अपने परिवार के भरण-पोषण में सहयोग देते हैं। छह या सात वर्ष की आयु के इन बच्चों के जीवन का मादक द्रव्य एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।"

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 अवैध मादक द्रव्य व्यापार से संबंधित तथ्य और आँकड़े

संयुक्त राष्ट्रसंघ मादक द्रव्य नियंत्रण कार्यक्रम की वार्षिक रिपोर्ट, 1999 में मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वालों के तथ्य और उनकी विश्वव्यापी संख्या संबंधी आँकड़ों एवं मादक द्रव्यों के प्रकार निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं।

तालिका

मादक द्रव्यों के प्रकार	कुल व्यसनियों की आकलित संख्या (लाखों में)	विश्व जनसंख्या का प्रतिशत
स्वापक	8.0	0.14
कोकेन	13.3	0.23
भाँग	141.2	2.45
हालूसिनोसेंज	25.5	0.44
उपशाक प्रकार	30.2	0.25
कुल आकलित	**227.4**	**3.92**

स्रोतः यू.एन.डी.सी.पी. (आर.ओ.एस.ए.), 1999.

इस तालिका से पता लगता है कि विश्व के 100 व्यक्तियों में से 4 व्यक्ति एक या अन्य प्रकार के मादक द्रव्य का प्रयोग करते हैं। हो सकता है कि यह सभी देशों में समान नहीं हो। किसी देश में यह प्रतिशत दूसरे देश से अधिक हो सकता है। भाँग सबसे अधिक दुरुपयोग किए जाने वाला मादक द्रव्य है। इसके बाद उपशामक अधिक प्रयोग की जाती है।

भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रचलन

भारत में शराब, भाँग और अफीम तीन प्रकार के परम्परागत मादक द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है। इस संबंध में चारों क्षेत्रों में अध्ययन किए गए जिनके परिणम नीचे दिखाए गए हैं :

तालिका

क्षेत्र	हेरोइन	अफीम	भाँग	शराब
दक्षिण भारत (5 शहर)	0.3%	2.6%	5.1%	—
उत्तर-पूर्वी राज्य	1.3%	0.3%	1.7%	19.8%
उत्तर-पश्चिमी राज्य	0.2%	0.5%	0.4%	17.2%
दिल्ली	0.3%	0.4%	0.4%	13.4%

यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में किया गया है। इसलिए हो सकता है कि इसके परिणाम देश की वास्तविकता को नहीं दर्शाते हों। इस तालिका से यह तो स्पष्ट होता है कि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में अफीम के अधिक व्यसनी हैं और उत्तर-पूर्व के क्षेत्रों में हेरोइन के अधिक व्यसनी पाए गए हैं। अफीम के सेवन करने वाले अधिकतर लोग कार्मिक वर्ग के हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में हेरोइन का अधिक प्रयोग होता है पर जो शहरों में रहते हैं उनमें सबसे अधिक सेवन करने वाले लोग युवा हैं। श्रमिक वर्ग और कार्मिक वर्ग भाँग का प्रयोग करता है किंतु इनके प्रयोग के भिन्न-भिन्न कारण रहे हैं।

तालिकाः एशिया में हेरोइन प्रयोगकर्त्ताओं की संख्या का विवरण

देश	व्यसनकर्त्ताओं की अनुमानित संख्या		हेरोइन का प्रयोगकर्त्ताओं की अनुमानित संख्या	संदर्भ
बंगलादेश	05-1.0 मिलियन	10,000 हेरोइन प्रयोगकर्त्ता	यू एन डी सी पी मादक द्रव्य की मांग में कमी 1988	
पाकिस्तान	3.00 मिलियन 51% हेराइन	15 लाख	यू एन डी सी पी चुनौति का सामना विश्व मादक द्रव्य रिर्पोट, 1997	
श्रीलंका	240,000	40,000	यू एन डी पी सी मादक द्रव्य की मांग में कमी, 1998	
नेपाल	40,000-50,000	49.7% हेरोइन	नेपाल की रिर्पोट यू एन डी पी सी (1995) मादक द्रव्य	
थाइलैंड	500,000	214,180 अधिकतम सूई लेना	(शस्त्र, वेश्यावृत्ति, जुआ, गांजा थाइलैंड की अवैध अर्थव्यवस्था और जननीति 9 पसूक फोंजपैचित, संगसिध पाइरियारंगसन, नौलनोइ टूरत (1993)	
इंडोनेशिया	130,000	70-80% हेरोइन प्रयोगकर्त्ता	यू एन डी पी सी मादक द्रव्य मांग में कमी, 1998	
भारत	2.25 मिलियन	70,0000	यू एन डी पी सी राष्ट्रीय मास्टर योजना 1990	
मलेशिया	350,000	हेरोइन प्रयोकर्त्ता	यू एन डी पी सी मादक द्रव्य मांग में कमी 1998	
चीन	150,000 540,000	अधिकतम सूई लेना	यू एन डी पी सी मादक द्रव्य में कमी 1988	
सिंगापुर	15,000– 20,000 अफीम के व्यसनी			

स्रोतः यू.एन.डी.सी.पो. (आर ओ एस ए) 1999

गैर-कानूनी मादक द्रव्य का उत्पादन

विश्व में अफीम का उत्पादन 1996 में 3900 टन था। इसका 80 प्रतिशत भाग **गोल्डन** क्रिसेंट और सुनहरा ट्रायंगल में उत्पादित हुआ। अफीम के पौधे अफगानिस्तान म्यामार, उत्तरी लाओस तथा उत्तनी थाईलैण्ड आदि में उगाए जाते हैं।

विश्व की 98 प्रतिशत कोकेन का उत्पादन दक्षिण अमरीका के पेरु, कोलम्बिया और बोलविया देशों में होता है। एक आकलन के अनुसार 1996 में कोकेन का उत्पादन 1000 टन के लगभग था।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार की सामाजिक कीमत

यद्यपि हम अगली इकाई में इस विषय पर विस्तार से चर्चा करेंगे किंतु यहाँ पर कुछ तथ्यों को ध्यान में रखना लाभदायक होगा। मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण हमें अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यदि ऐसा न होता तो अधिक मादक द्रव्य या शराब लेने से बहुत लोगों की अकाल मौत न होती। मादक द्रव्य दुरुपयोग के दुप्रभाव नीचे दिए जा रहे हैं:

- स्वास्थ्य
- पारिवारिक संबंध
- सामाजिक संबंध
- अपराध
- दुर्घटनाएँ

मादक द्रव्य दुरुपयोग का सबसे पहला परिणाम है स्वास्थ्य नष्ट होना। यह प्रभाव व्यक्तिगत ही नहीं होता अपितु इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित होती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के व्यापक प्रसार से एच.आई.वी./एड्स जैसी बीमारियाँ फैल जाती हैं। इसका समाज की स्वास्थ्य व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य की देखभाल करना व्यक्ति की सबसे अधिक जिम्मेदारी होती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक ऐसा मामला है जहाँ पर व्यक्ति स्वयं शिथिल हो जाता है और वह अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने में असमर्थ होता है।

परिवार समाज की मूलभूत इकाई है। मादक द्रव्य दुरुपयोग परिवार के संबंधों को नष्ट कर देता है। परिवार ही व्यक्ति के विकास के लिए भावनात्मक सहयोग देता है। बच्चों का पालन–पोषण और विकास यदि ऐसे परिवार में हो जहाँ पर मादक द्रव्य दुरुपयोग होता है तो वह परिवार और समाज के योग्य नहीं रहते हैं। विघटित पारिवारिक संबंध समाज में सुचारु सामंजस्य संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

व्यसन व्यक्ति को समाज से अलग कर देता है। यह इसलिए होता है क्योंकि समाज इसको बुरी नजर से देखता है अथवा इसको अच्छा नहीं मानता। व्यसनी अपनी आदतों को समाज के लोगों से छिपाने का प्रयास करता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति भयभीत रहता है कि कहीं समाज उसे एक बुरे व्यक्ति के रूप में स्वीकार न कर ले। मादक द्रव्य व्यसन के साथ कलंक लगा होता है, इसलिए व्यसनी छिप कर रहता है और समाज से दूर रहने का अर्थ है अपराध की ओर कदम रखना।

व्यसनी को संगठित समूह अपने आपराधिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। व्यसन अनेक यातायात और औद्योगिक दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण अनेक कार्य दिवसों की हानि होती है।

3.5 विभिन्न समूहों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

यद्यपि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक व्यापक समस्या है, लेकिन यह सभी समूहों को समान रूप से प्रभावित नहीं करती। इसका एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक आयु समूह से दूसरे आयु समूह तथा स्त्री-पुरुषों में अपना प्रभाव समान न होकर अलग-अलग होता है।

युवाओं और आवारा बच्चों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

1960 के दशक के मध्य से मादक द्रव्य दुरुपयोग विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में एक गंभीर मुद्दा बन गया था। 1963 में कलकत्ता से पहली अध्ययन रिपोर्ट आई। इसके अनुसार "विश्वविद्यालय के 1130 विद्यार्थियों में से 37.4 प्रतिशत में मादक द्रव्य दुरुपयोग पाया गया था। (तम्बाकू का 26 प्रतिशत तथा एम्फेटामाइन का 11.45 प्रतिशत)।"

बाद के अध्ययनों से पता लगता है कि पुरुष विद्यार्थियों में मादक द्रव्य दुरुपयोग अधिक है। कोई एक मादक द्रव्य नहीं था जिसका दुरुपयोग विद्यार्थी करते हों, विद्यार्थी अनेक प्रकार के मादक द्रव्यों का इस्तेमाल करते थे।

दूसरा अध्ययन 1975-78 के बीच उच्च विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) के बारे में हुआ। इससे पता चला कि 34 प्रतिशत विद्यार्थी मादक द्रव्य लेते हैं। इन मादक द्रव्यों में शराब, एम्फोटाइन, भाँग, एल.एस.डी., स्वापक, अफीम, पेथीडीन और बारबीट्रेट्स आदि शामिल थे।

भारत के सभी हिस्सों में 1970 से 1986 के बीच अनेक अध्ययन किए गए। इनसे पता चला कि 10 से 15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अपने जीवन में शराब का प्रयोग किया था। इसमें उच्च विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थी शामिल थे। तम्बाकू का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 8 से 15 प्रतिशत थी। इन विद्यार्थियों में से 1 से 2.5 प्रतिशत ने ट्रांक्विलाइजर का प्रयोग करने का प्रयास किया था।

भारत में 1986 से हेरोइन के व्यापक प्रयोग की सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं। भाँग के प्रयोग का प्रचार महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में अधिक रहा, 5.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने साक्षात्कार के समय बताया कि महाविद्यालयों के दिनों में उन्होंने भाँग पीने के प्रयास किए थे।

भारत में शायद आवारा बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। गरीबी के कारण बहुत से बच्चे काम की खोज में शहरों में चले जाते हैं। शहरों में इन बच्चों को कबाड़ चुनने, जूते पॉलिश करने, होटलों में काम करने और छोटे उद्योगों में जीवनयापन के साधन उपलब्ध हो जाते हैं। जब इनको अच्छे और ईमानदारी से काम नहीं मिलते हैं तो ये लोग छोटे-छोटे अपराधों में लिप्त हो जाते हैं जैसे कि जेब काटना, चोरी करना आदि।

ये बच्चे साथियों के दबाव के कारण मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं। इनमें से बहुत से बच्चे बहुत ही कठिन और नीरस कामों में लगे होते हैं। मादक द्रव्य उनको शारीरिक और मानसिक पीड़ा कम करने में सहायता करता है। वे तम्बाकू पीने लगते हैं (धूम्रपान) तथा ब्राउन शुगर तथा अन्य नशीले स्वापक पदार्थों से प्रभावित हो जाते हैं। 10 वर्ष की आयु में ही वे तम्बाकू और शराब पर निर्भर रहने लगते हैं। दिल्ली की मलिन बस्तियों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि 75 प्रतिशत 16 वर्ष की आयु के लड़के नियमित रूप से शराब का सेवन करते हैं। इनमें लगभग 50 प्रतिशत को भाँग पीने का अनुभव है। इनमें से लगभग 10 प्रतिशत ने हेरोइन के सेवन की बात स्वीकार की है। हेरोइन लेने की संख्या का प्रतिशत कम होना इसके ऊँचे मूल्य के कारण है।

मादक द्रव्य का दुरुपयोग और महिलाएँ

विश्व में हुए अध्ययनों/अनुसंधानों से पता चलता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ मादक द्रव्य दुरुपयोग कम करती हैं। जैविकी कारणों से महिलाओं पर मादक द्रव्य का विपरीत

प्रभाव होता है। "सामाजिक संदर्भ में देखा गया है कि समाज महिलाओं के मादक द्रव्य लेने को सहन नहीं करता और एशिया में इस तरह की सांस्कृतिक परम्परा खास तौर पर मौजूद है। यदि इस तरह की घटनाएँ होती भी हैं तो वे छुपी रहती हैं उनकी सूचना नहीं मिलती है। महिला ऐसा करती है तो उसे लोक लाज के कारण छिपा के रखा जाता है। मादक द्रव्य लेने वाली महिला दुगनी पथभ्रष्ट लगती है।"

गोवा तथा औद्योगिक नगरों में महिलाओं द्वारा मादक द्रव्य सेवन के संबंध में रिपोर्ट प्राप्त हुई है (सेन, 1991)। सूचना है कि भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में लगभग 7 प्रतिशत महिलाएँ मादक द्रव्य लेने की आदी हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में 22 प्रतिशत महिलाएँ मादक द्रव्य का सेवन करती हैं (अग्रवाल, 1995)। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि पुरुषों से अधिक महिलाएँ स्वापक मादक द्रव्य का सेवन करती हैं।

पुरुषों की तुलना में महिलाओं में मादक द्रव्य दुरुपयोग के सामाजिक परिणाम अधिक भयानक होते हैं। महिलाओं के कंधों पर अधिक भार होता है। बच्चों का पालन-पोषण एवं उनकी देखभाल की जिम्मेदारी होती है। मादक द्रव्य के प्रयोग से वे अपनी जिम्मेदारी को भली प्रकार नहीं निभा पाती। परिवार के दूसरे व्यक्ति उन्हें बंदिश मे रखते हैं, उन्हें घर खर्च बहुत कम दिया जाता है तथा कभी-कभी उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाता है। उन्हें अधिकतर अपनी आदतों को पूरा करने के लिए उधार लेना पड़ता है इससे घर की आय में अनियमितताएँ हो जाती हैं। कभी-कभी मादक द्रव्य का सेवन करने वाली कुछ महिलाएँ मादक द्रव्य के अवैध व्यापार से जुड़ जाती हैं। वे मादक द्रव्य को बिक्री के लिए यहाँ से वहाँ ले जाने और वेश्यावृत्ति जैसे गैर-कानूनी धंधों में लिप्त हो जाती है। इस धंधे में वे आसानी से एच आई वी/संक्रमण की शिकार बन जाती हैं। यह भी देखा गया है कि अनेक प्रभावित महिलाएँ अपना इलाज कराने में असमर्थ होती हैं क्योंकि महिलाओं के लिए विशेष इलाज का कोई प्रबंध नहीं है।

कैदियों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

हमारे देश की जेलों में मादक द्रव्य का सेवन करने वाले कैदियों की देखभाल करने की कोई व्यवस्था नहीं है। जेलों में मादक द्रव्य सेवन की सीमा के कोई राष्ट्रीय आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। देश में मादक द्रव्य सेवन करने वाले कैदियों की संख्या में आए दिन वृद्धि हो रही है। अधिकतर मादक द्रव्य व्यसनी जेल में भी अपनी इस लत को लगातार बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ व्यवस्था कर ही लेते हैं। दूसरे अन्य मामलों में जेल में ही मादक द्रव्य लेने की

आदत पड़ जाती है। इसका मुख्य कारण जेलों के वातावरण और नीरसता से बचने के लिए वे ऐसा करते हैं।

इस तरह के कैदियों को अलग रखने की व्यवस्था शायद ही किसी जेल में हो। वे बच्चे जो मादक द्रव्य नहीं लेते किंतु मादक द्रव्य लाने-लेजाने के काम करने के कारण बंदी बनाए गए हैं वे भी दूसरे अपराधियों के साथ रखे जाते हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि लगभग 15 मादक द्रव्य व्यसनी दिल्ली के तिहाड़ जेल में प्रतिदिन बंदी बनाए जाते हैं। 1993 से पहले तिहाड़ जेल में व्यसनियों के विशेष इलाज और पुनर्वास के लिए कोई प्रबंध नहीं था। इसके बाद कुछ व्यवस्था की गई। आज इस जेल में पाँच विशेष केंद्र समुचित रूप से अपना कार्य कर रहे हैं।

आदिवासी समुदायों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

एक आकलन के अनुसार विश्व के 70 देशों में 30 करोड़ के लगभग देशी या आदिवासी लोग निवास करते हैं। वे देशी या देशज या आदिवासी जातियों के नाम से जाने जाते हैं क्योंकि ये लोग अपनी जमीन पर उस समय से रह रहे हैं जब भूमि बेचने वाले कहीं से भी वहाँ पर नहीं पहुँचने थे। उनमें अत्यधिक सांस्कृतिक मानव जातीय, भाषाई तथा धार्मिक भिन्नताएँ हैं। जैसे उनमें अभी भी कुछ शिकार पर जीते हैं और घने जंगलों में जीवनयापन करते हैं तथा कुछ विश्व के वित्तीय केंद्रों में प्रमुख व्यापारी बन गए हैं।

फिर भी अधिकतर आदिवासी समूह विरासत मे मिले सामान्य नशे की जड़ी–बूटियों का प्रयोग करते हैं जो मनोसक्रिय करने वाला एक द्रव्य है। वे इसे सदियों बाद के अपने आस पास उपलब्ध प्राकृतिक द्रव्यों की मनो परिवर्तनकारी विशेषताओं के बारे में जान गए। ये उनके लिए प्रायः बहुत महत्वपूर्ण थे क्योंकि उनका प्रयोग चिकित्सा, पोषण और धार्मिक कार्यों में होता है। हेल्यूसिनोजेंस सहित मसरूम के कुछ प्रकारों तथा केक्टस का मध्य और दक्षिणी अमरीका में धार्मिक समारोहों में प्रयोग किया जाता था। एशिया में, अफीम का दर्द निवारक के रूप में पुराना इतिहास है। यहाँ पर यह आराम पहुँचाने और पुराने दर्द तथा गैस से संबंधित समस्याओं के उपचार के लिए प्रयोग की जाती रही है। अफ्रीका में भाँग का

प्रयोग वे शराब को तेज बनाने में करते थे। यह कार्य आदिवासी लोगों का सामान्य जीवन का अंग है।

संस्कृतियों में मनो-परिवर्तनीय द्रव्यों के परंपरागत प्रयोग को नियमित करने के लिए कठोर परंपराएँ हैं। जबकि अनेक समुदायों ने परंपरागत व्यवहारों को बनाए रखा है क्योंकि वे शेष विश्व से अलग-थलग हैं। जबकि समाप्त होने वाली कुछ अन्य सभ्यताओं ने नृजातीय समूहों की नीतियों में अपने को समाहित कर लिया है। आदिवासी समुदायों में लगता है कि मादक द्रव्य सेवन की अधिक संभावनाएँ रहती हैं। इस तथ्य का नागालैंड, मिजोरम और मणिपुर राज्यों से प्राप्त गहन मादक द्रव्य दुरुपयोगों की रिपोर्टों से पता लगता है।

इसके अतिरिक्त मध्य भारत के अनेक आदिवासी समुदाय के लोगों में सबसे अधिक शराब पीने की दर है। इसके अनेक कारण हैं। आदिवासी समुदाय अपने युवाओं को अत्यधिक स्वतंत्रता देते हैं। अभी आदिवासी समुदाय संक्रमण काल में चल रहे हैं। आदिवासी समुदाय देश के शेष भाग से अलग थे। परंतु संचार तथा यातायात सुविधाओं की उपलब्धि के कारण उन्हें अकस्मात् नए मूल्यों के बारे में जानकारी मिलने लगी है। उनकी अपनी मूल्यवान व्यवस्था और सामाजिक नियंत्रण समाज को एक साथ रखने के लिए अधिक प्रभावी नहीं रहे।

उत्तर पूर्वी राज्यों में सबसे अधिक प्रभावित आदिवासी समुदाय हैं। इनमें से अधिकतर म्यामार की सीमा से लगे हैं जो मादक द्रव्य उत्पादन क्षेत्र है। मध्य भारत के अधिकतर आदिवासी समुदाय भी मध्यप्रदेश के अफीम उत्पादन क्षेत्रों से संबद्ध हैं। उत्तर-पूर्व भारत के आदिवासी समुदायों में व्यसनियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। मादक द्रव्य उत्पादन क्षेत्र के नजदीक होने के साथ ही अचानक नई संस्कृति और मूल्यों का पता लगने से समस्याएँ गंभीर हो गई हैं। इसके साथ ही आतंकवाद का उदय स्वाभाविक है, जहाँ पर अवैध व्यापार और हथियारों के सौदागर एक साथ मिलकर अपना कार्य कर रहे हैं।

तथापि आदिवासी समुदायों में शराब का प्रयोग दैनिक भोजन का एक हिस्सा है यहाँ पर शराब के उत्पादन और उसके उपभोग पर किसी प्रकार की कानूनी पाबंदियाँ नहीं हैं पहले आदिवासी समुदायों में प्रयुक्त शराब की किस्में किसी निर्माणशाला में तैयार नहीं की जाती थीं। अधिकतर नशीली शराब व्यक्ति की आंत के मार्ग से समा जाती है। जब व्यक्ति शराब का सेवन करने के साथ कड़ा परिश्रम करता है तो यह उसकी कैलोरी को जलाने में सहायक होती है। बाजार अर्थव्यवस्था के आने से अनेक युवा और वृद्ध लोग आराम तलबी हो गए हैं। इन सबके कारण आदिवासी समाज के ऊँचे स्तर के लोगों में मद्यपान करने की प्रवृत्ति में वृद्धि के लिए अधिक सहयोग मिला।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग आदिवासी समुदायों को किस प्रकार प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

3.6 सारांश

मादक द्रव्य दुरुपयोग और मादक द्रव्य का अवैध व्यापार दोनों एक साथ चलते हैं। जहाँ पर मादक द्रव्य की माँग है, वहाँ उसकी पूर्ति भी होगी। मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसका अवैध व्यापार दोनों ही गैर-कानूनी कार्य हैं। इसके साथ ही यह एक सामाजिक समस्या भी है। हमने देखा है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार से सामाजिक समस्या है। हमने मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के बारे में चर्चा की है कि यह अवैध व्यापार क्या है और क्यों होता है। हमने अनेक घटकों के संबंध में विश्लेषण किया है जो मादक द्रव्य के अवैध व्यापार को प्रभावित करते हैं।

हमने तालिकाओं के द्वारा विश्व और भारत में मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विस्तार को दर्शाने का प्रयास किया है विभिन्न मानव जातियाँ, आयु और लिंग समूहों के समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आती हैं जब वे मादक द्रव्य सेवन आरंभ करते हैं। इस इकाई में हमने विश्व और भारत के संबंध में मादक द्रव्य दुरुपयोग और ड्रग के अवैध व्यापार को विस्तार से बताया है।

3.7 शब्दावली

नई संस्कृति : वह संस्कृति जो अपनी संस्कृति से भिन्न है।

वाहक : वह व्यक्ति जिसे संदेश या कुछ सामान लाने-ले-जाने के लिए नियुक्त किया जाता है। यहाँ पर वह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर गैर-कानूनी मादक द्रव्य का आदान-प्रदान करता है।

संक्रमण काल : परिवर्तन का समय, विशेषकर सामाजिक परिवर्तन का समय।

विषैला पदार्थ : विषैला द्रव्य।

उच्च वर्ग : वे लोग जो सामाजिक स्थितियों का अधिक आनंद उठाते हैं।

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

लैरी सीगल (संपादित) (1987), *एड्स एण्ड सबस्टांस एब्यूज,* हेरींगटन पार्क प्रेस, न्यूयार्क।

अनिल अग्रवाल (1995), *नारकोटिक्स ड्रग्स, नेशनल बुक ट्रस्ट,* नई दिल्ली।

इरा मॉथनर और एलन विट्ज, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स,* पैंगुईन बुक्स, लंदन।

यू एन डी सी पी (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन-रिपोर्ट,* दक्षिण एशिया का क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।

नेमीशरण मित्तल (1991), *ड्रग माफियाज,* पुस्तक महल, दिल्ली।

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) मानव समाज एक जीव की तरह है। जब कोई रोग किसी अंग पर हो जाता है तो उससे पूरे शरीर को कष्ट होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक बीमारी है, जिससे संपूर्ण मानव समाज प्रभावित होता है। यह मानव समाज के सामान्य कार्यों को प्रभावित करता है। प्रत्येक समाज अपना कार्य कुछ मानदण्डों और नियमों के तहत करता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव समाज के सामान्य कार्यों को विपरीत रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक समस्याएँ समाज के सदस्यों द्वारा अनुचित व्यवहार के माध्यम से उत्पन्न की जाती है। इस तरह के व्यवहार समाज के कल्याण में सहयोग नहीं देते। वास्तव में ये समाज की भलाई को संकट में डालते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग समाज को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से संकट में डालते हैं, उसे नष्ट करते हैं। इसलिए यह स्पष्ट रूप से एक सामाजिक समस्या है।

बोध प्रश्न II

1) मादक द्रव्य का अवैध व्यापार एक आपराधिक कार्य है। यह समाज और राष्ट्र के हितों के विरुद्ध है। ड्रग का अवैध व्यापार ड्रग्स दुरुपयोग को बढ़ावा देता है और मानवता को गंभीर संकट में डालता है। ड्रग्स का अवैध व्यापार आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि करता है। ये हत्याएँ और हिंसा करने में बढ़ावा देते हैं। ड्रग्स का अवैध व्यापार आतंकवादी गतिविधियों और हथियारों के प्रयोगों से संबंधित होता है। मादक द्रव्य का अवैध व्यापार काले धन का संग्रह करने में सहयोग देता है। इसके साथ ही यह जंगलों को भी नष्ट करता है।

बोध प्रश्न III

1) सम्पूर्ण भारत में आदिवासी समुदाय संक्रमण काल में है। इनमें से अनेक पहली बार आधुनिक विश्व का अनुभव कर रहे हैं। उनके पास विभिन्न सामाजिक मानदण्डों होते हैं जो वे भारत के अन्य समुदायों से लागू होते हैं।

   हमने देखा है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग से अनेक आदिवासी समुदाय गंभीर रूप से प्रभावित हैं। इसमें एक कारण यह है कि आधुनिक संचार और जन माध्यम के द्वारा सांस्कृतिक दूरियाँ पैदा हो गई हैं। दूसरे, देर से अपनाई गई राजनीतिक व्यवस्था के कारण उन्होंने वह सामाजिक नियंत्रण खो दिया है जिसके माध्यम से समाज को व्यवस्थित रखते थे। आदिवासी समुदायों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रभाव भयानक रहा, इससे उन्हें बहुत बड़ी हानि हुई है।

इकाई 4 मादक द्रव्य परिदृश्य—वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

4.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्षेत्रीय परिदृश्य

4.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग : भारतीय परिदृश्य

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य और उनके दुरुपयोग, किस प्रकार से दुरुपयोग किए जाते हैं और कैसे किए जाते हैं तथा विभिन्न देशों में मादक द्रव्य के बारे में विभिन्न दृष्टिकोणों का अनुमान हो जाएगा। आशा करते हैं कि आपको भारत में इसकी गंभीरता की जानकारी प्राप्त होगी और आप इससे संघर्ष करने में समर्थ होंगे।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप जान सकेंगे :

- विश्व में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य और उसकी सार्वभौमिक समस्या;
- विश्व के विभिन्न भागों में मादक द्रव्य से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याएँ और विभिन्न देशों द्वारा इन समस्याओं से निपटने के प्रयास; और
- भारतीय मादक-द्रव्य परिदृश्य के साथ-साथ देश में इसकी व्यापक व घातक जटिल समस्या के विषय में विचारों से अवगत हो सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग विश्व की सबसे घातक समस्याओं में से एक है। विश्व के अनेक युवा लोग इस घातक बीमारी के शिकार हो चुके हैं। जब हम यह कहते हैं कि यह विश्वव्यापी समस्या है तब हमें यह समझ लेना चाहिए कि मादक द्रव्य दुनिया के प्रत्येक कोने में उपलब्ध हैं। यद्यपि मादक द्रव्य दुनिया के प्रत्येक हिस्से में उपलब्ध हैं परंतु इसकी समस्या की गहनता एक देश से दूसरे देश में भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए कोकेन विश्व के सभी देशों में उपलब्ध नहीं होती है और फेनी जैसा मादक द्रव्य केवल गोवा में ही उपलब्ध होता है। एक मादक द्रव्य को हम अवैधानिक मानते हैं परंतु वही मादक द्रव्य विश्व के दूसरे क्षेत्र में वैधानिक है। भारत में गाँजा और भाँग गैर-कानूनी मादक द्रव्य हैं। परंतु भारत में कई

जनजातियों में गांजे को धूम्रपान के रूप में प्रयोग करना सांस्कृतिक परंपरागत लत का हिस्सा है। भारत के बहुत सारे राज्यों में ताड़ी का प्रयोग गैर-कानूनी नहीं है परंतु कुछ राज्यों में ताड़ी का प्रयोग गैर-कानूनी है और इस पर प्रतिबंध है। अतः मादक द्रव्य की समस्या के संबंध में व्यापक दृष्टिकोण के लिए आपको मादक द्रव्य के वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिदृश्य को समझना होगा। क्या आप ऐसा नहीं मानते हैं कि मादक द्रव्य व्यापार व इसके विस्तार के बारे में जानना बहुत दिलचस्प होगा? क्या आपने कभी उस धनराशि के बारे में सोचा है जो इस मादक द्रव्य व्यापार में लगी हुई है। क्या आपने यह जानने का प्रयास किया कि मादक द्रव्य माफिया क्या है? जब आप अखबारों में यह पढ़ते हैं कि करोड़ों रुपए के मादक द्रव्य पकड़े गए हैं जिससे तस्कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर से जुड़े हुए थे। आपको यह समझ लेना चाहिए कि यह रकम उनके लिए बहुत छोटी है तथा केवल आइसबर्ग के बराबर है।

4.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

बीसवीं शताब्दी में, दूसरे विश्व युद्ध के बहुत बाद में मादक द्रव्य संकट वैश्विक समस्या बन गया। अधिकतर नागरिक और समाज मादक द्रव्य समस्या और इससे संबंधित विकृतियों का सामना कर रहे थे। सभी प्रकार के मादक द्रव्यों में से सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले नशीले मादक द्रव्यों में शराब प्रथम है। शराब का प्रयोग पश्चिमी संस्कृति के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। शराब पश्चिमी देशों में अनेक समस्याओं का केंद्र बिंदु है जिनमें से कुछ नाम – दुर्घटनाएँ, अपराध, घरेलू हिंसा, सामाजिक अव्यवस्था आदि हैं। क्या आप आश्चर्यचकित नहीं हैं कि पश्चिमी देशों की दस से पंद्रह प्रतिशत वयस्क जनसंख्या की समस्या शराब है। आश्चर्य न करें, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से सिफारिश की थी कि वर्ष 2000 तक सभी राष्ट्रों को चाहिए कि वे अपने यहाँ 25 प्रतिशत शराब का प्रयोग कम करें। गैर-कानूनी या अत्यधिक नशीली दवाएँ भी विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। एक आकलन है कि गैर-कानूनी मादक द्रव्य व्यापार में लगी धनराशि विश्व में शस्त्र व्यापार के बाद दूसरे स्थान पर है। चिकित्सा संबंधी मादक द्रव्यों का प्रयोग चिकित्सक की सलाह से दवाई के रूप में किया जाना चाहिए किंतु इनका विश्वभर में

दुरुपयोग होता है। ये सब संकेत विश्व की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हैं। अनेक नशीले द्रव्यों का बहु प्रयोग या दुरुपयोग संपूर्ण विश्व में साधारण बात हो गई है।

सभी देशों में, नशीले मादक द्रव्यों के प्रयोग का अनुपात विकट और विशालतम स्थिति में पहुँच गया है जिसके कारण जन स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवस्था अकथनीय समस्या बन गई है। संपूर्ण विश्व में सभी प्रकार के मादक द्रव्यों के प्रयोग में बेहद वृद्धि हुई है। नए-नए नशीले मादक द्रव्य प्रतिदिन बाजार में आ रहे हैं। इसके अलावा कुछ ऐसे मादक द्रव्य हैं जिनका प्रचलन कुछ देशों तक सीमित है, कुछ भिन्न प्रकार और मादक द्रव्य लगभग सभी देशों में उपलब्ध हैं। अनेक देशों में मादक द्रव्य का दुरुपयोग जीवन का एक हिस्सा बन गया है और यह सिलसिला कहीं थमता नहीं दिखाई दे रहा है। गैर-कानूनी मादक द्रव्यों के व्यापारियों की गतिविधियाँ विश्व भर में सामान्य बात हो गई हैं। इनमें से कुछ मादक द्रव्य सिंडीकेट इतने शक्तिशाली हैं कि वे किसी भी देश की सरकार को गिराने की धमकी दे सकते हैं अथवा सरकार गिराने की सामर्थ्य रखते हैं। वर्ष 1987 में वियना में मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा गैर-कानूनी मादक द्रव्य व्यापार पर संयुक्त राष्ट्र संघ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री जेवियर पेरेज डी. क्यूलर के भाषण के कुछ अंशों को यहाँ प्रस्तुत करना प्रासंगिक रहेगा।

"वास्तव में यह सत्य है कि मादक द्रव्य व्यसनी लोग अपना स्वास्थ्य और स्वतंत्रता खो चुके हैं, इसी तरह से अनेक देश इसके ही कारण भ्रष्टाचार में फंस गए हैं, और स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि उनकी स्वतंत्रता खतरे में है। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा स्वयं खतरे में है जिसका मुख्य कारण गैर-कानूनी मादक द्रव्यों के व्यापार के चलते गैर-कानूनी हथियारों का क्रय-विक्रय, विनाश और अतांकवाद है। संक्षेप में, हम एक ऐसी बुराई अथवा दुश्मन से लड़ रहे है। जो केवल मानवता को ही नष्ट नहीं कर रहा है बल्कि भ्रष्टाचार और हिंसा के माध्यम से समाज की स्थापना व आधार को कमजोर कर रहा है।"

जॉनस हारटेल्यू ने अपनी पुस्तक 'विश्व – एक मादक द्रव्य दृश्य' में लिखा है कि :

"मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार दो या तीन महाद्वीपों में संचालित होता है जो अनेक देशों में पुलिस और सीमा शुल्क अधिकारियों को लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। मादक द्रव्यों का उत्पादन एक देश में होता है, संसाधित दूसरे देश में, तस्करी तीसरे देश के माध्यम से, बेचे जाते हैं चौथे देश में और इस सम्पूर्ण तस्करी का लाभ मिलता है पाँचवें देश में। इन सबके कारण कानून को लागू करने वाली एजेंसियों के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय अपराध से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अपराध पुलिस संगठन (ICPO, इंटरपोल) तथा विश्व सीमा शुल्क संगठन (WCO) ने संयुक्त रूप से ठोस प्रयास किए हैं।"

कुछ मादक द्रव्य सिंडीकेट बहुत ही शक्तिशाली होते हैं वे अपने देश के "राज्य के अंदर राज्य" का कार्य करते हैं। वे अपनी शक्ति का प्रयोग, अधिकारियों को भ्रष्ट बनाने, धमकी देने, भयभीत करने और हत्या, न्याय तथा अभियोजक और राजनीति को दूषित तथा अर्थव्यवस्था को कमजोर करने में लगाते हैं। कोलम्बिया जैसे देश का स्पष्ट उदाहरण दिया जा सकता है। यहाँ की संवैधानिक सरकार अपने यहाँ पर कानून और व्यवस्था को बनाए रखने में असमर्थ है तथा वह मादक द्रव्य सिंडीकेट के आक्रमणों से अपने लोक सेवकों की रक्षा करने, उनको संरक्षण देने में असमर्थ है।

विश्व में मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिदृश्य बहुत ही खतरनाक स्थिति में पहुँच गया है। सरकारों और सेवा संगठनों द्वारा उपभोग पर रोक, इलाज कराने और परामर्श प्रदान करने वाली सेवाओं का अपेक्षित प्रभाव नहीं हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप मादक द्रव्य दुरुपयोग

पर विभिन्न मंचों पर घोर चर्चाएँ हुई हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की महासभा ने सिफारिश की थी कि विश्व के सभी देश वर्ष 2000 तक 25 प्रतिशत शराब उपभोग को कम करें। बहुत ही हास्यास्पद स्थिति है जिसका विश्व साक्षी है कि यहाँ हम एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी में पहुँच गए वहीं इसके उत्पादन और उपभोग में वृद्धि हुई है।

इस इकाई के इस भाग में हमने जो पढ़ा है उससे स्पष्ट है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या मुख्य वैश्विक समस्या बन गई है। क्या आपने इससे पहले इस तरह की स्थिति के बारे में कभी सोचा था? उपलब्ध आँकड़े कुछ चौंकाने वाले तथ्य प्रकट करते हैं। प्रत्येक संगठन जो मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध इस क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी संगठन समस्या की विकरालता के बारे में जानते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की 1997 की भाँग पर रिपोर्ट इस तथ्य (भाँग : स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य और अनुसंधान एजेंडा) को स्वीकार करती है कि : भाँग का प्रयोग "संपूर्ण विश्व में तेजी से फैला है जो कि मनोरोगी बनाने वाला पदार्थ है।" यूरोपियन यूनियन में मादक द्रव्य समस्या वाले राज्य पर वार्षिक रिपोर्ट 1998 में मादक द्रव्य और मादक द्रव्य व्यसनी लोगों के लिए यूरोपियन निगरानी केंद्र द्वारा प्रकाशित की थी जिसमें यूरोपियन यूनियन के देशों में व्यसन के बढ़ते प्रभाव को निम्न प्रकार से उद्धृत किया गया है कि "गैर-कानूनी मादक-द्रव्यों का प्रयोग और स्वास्थ्य समस्याओं के बीच बहुत ही गहरा संबंध इंजेक्शन लगाने वालों में पाया गया है।" यद्यपि यह आम जनसंख्या में बहुत कम है। व्यसनी लोगों में से सुई से नशा लेने वालों की दर का 10-15 प्रतिशत से 80 प्रतिशत लोग ही इलाज के लिए आते हैं। इंजेक्शन से मादक द्रव्य दुरुपयोग न करने वालों की अपेक्षा इंजेक्शन लेने वाले मुख्य रूप से हेरोइन के व्यसनी अधिक मृत्यु को प्राप्त होते हैं और उन्हें एच आई वी/एड्स और यकृत शोथ (हपेटाइटिस) जैसे रोगों के अधिक होने का खतरा होता है।

यह कथन मादक द्रव्य लेने वालों के लिए खतरे के नए आयाम को बताता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग व यकृत शोथ के बीच संबंध के बारे में टिप्पणी करते हुए इसी रिपोर्ट में कहा गया है : सुई से मादक द्रव्य लेन वालों में यकृत शोथ विशेषतः यकृत शोथ-सी (Hepatities C) स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बेहद गंभीर समस्या है। अनेक देशों में यकृत शोथ को अत्यंत ऊँची दर पर देखा गया जो इस बात का संकेत करता है कि यह इंजेक्शन लेने वालों के बीच जोखिम भरे व्यवहार हैं जिन पर शायद ध्यान नहीं दिया है – जैसे कि चम्मचों, रुई तथा अन्य कार्यों में साझीदारी करना। यूरोकेयर की एक रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष 1996 मे फ्रांस में औसतन 15 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति ने औसतन 14.5 लीटर शराब की खरीददारी की। इसी तरह कनाडा में हुए एक अध्ययन के अनुसार 35 प्रतिशत आत्म हत्याओं और 60 प्रतिशत मानव हत्याओं का संबंध शराब पीने से है। एक अन्य अध्ययन रिपोर्ट से पता चलता है कि 1990 में संयुक्त राज्य अमेरिका में शराब के दुरुपयोग में कुल अर्थव्यवस्थाओं की लागत का आकलन लगभग 100,000 मिलियन डॉलर था।

शायद आपको आश्चर्य हो कि विश्व व्यसन के द्वारा हो रही तबाही या विध्वंस को एक खामोश असहाय दर्शक की तरह देख रहा है? इसका उत्तर है, नहीं। मादक-द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध सरकारें, संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा विभिन्न सेवा-संगठन लगातार सघन प्रयास कर रहे हैं। नशे के व्यसन को एक रोग के रूप में स्वीकार करते हुए अनेक सेवा संस्थाओं ने रोकथाम कार्य करने के अतिरिक्त इलाज व पुनर्वास की सुविधाएँ देने का प्रयास किया। सिंगापुर और मलेशिया जैसे देशों ने मादक द्रव्य से संबंधित अपराधों को गंभीरता से लिया है उनको सख्त कानून की पकड़ में लाकर कड़ी सजा देने का प्रावधान किया गया है। उदाहरण के लिए सिंगापुर में गैर-कानूनी व्यापार से खरीदी गई कोकेन जिसका वजन बीस ग्राम से कम न हो और तीस ग्राम से अधिक न हो, पकड़े जाने पर अधिक से अधिक 30 वर्ष की कैद और 15 कौड़े तथा कम से कम 20 वर्ष की कैद

और 15 कोड़े की सजा दी जाती है। इसके अलावा यदि कोकेन की मात्रा 30 ग्राम से अधिक पाई गई तो अपराधी को मौत की सजा दी जाएगी। परंतु इस तरह के छोटे देशों में इतनी गंभीर और भयानक सजा होते हुए भी वर्ष 1991 में 3823 ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मादक द्रव्य का व्यसन था और उन्हें इलाज के लिए भर्ती कराया गया था। इन सब प्रयासों और रोकथाम के बावजूद मादक द्रव्य दुरुपयोग और इसका गैर-कानूनी व्यापार इस आधुनिक विश्व में लगातार चल रहा है।

जोनास हरटेलियस ने अपनी पुस्तक में मादक द्रव्य समस्या को काबू में लाने वाली कल्याणकारी नीतियों की असफलता के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं। "विभिन्न प्रकार की चिकित्सा देखभाल, परामर्श आदि पर विशाल राशि व्यय करने के बावजूद बाहरी जनकल्याण प्रणाली के दूरगामी परिणाम सिद्ध नहीं किए जा सके हैं। चिकित्सा व उसके सदृश उपायों का महत्व मानवतावादी है और उन उपायों से जीवन की रक्षा करना अनिवार्य है। फिर भी ये आप मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित जन स्वास्थ्य समस्याओं का निदान नहीं कर रहे हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या चिकित्सा सुविधाओं और जन सुरक्षा तंत्र के लिए बेहद गंभीर खतरा बनी हुई है।"

आजकल कुछ क्षेत्रों में कल्याण की यह भावना पनप रही है कि "कल्याणकारी कार्यों को कम कर दो" अर्थात् यह सभी नागरिकों के लिए व्यापक सेवा उपलब्ध कराने की नीति है। इन सब कार्यों के लिए लागत अत्यधिक दिखाई पड़ती है किंतु परिणाम कुछ नहीं निकलते हैं। इसकी पराकाष्ठा में लोग सोचने लगे हैं कि "स्वयं जीयो और दूसरों को मरने दो" – यह प्रवृत्ति अहस्तक्षेप के सिद्धांत की प्रवृत्ति है। इसे संबंधियों और पड़ोसियों की देखभाल करना व्यक्ति और परिवारों की जिम्मेदारी के रूप में देखा जाएगा। इस प्रकार उस समय व्यक्ति को मादक द्रव्य दुरुपयोग के खतरों से बचाने का दायित्व समाज से हटकर व्यक्तिगत, स्थानीय समुदाय, सहयोग और यजमान का हो जाएगा। निरंतर बढ़ रही कल्याण विपदाओं के बावजूद अभी तक मादक द्रव्य दुरुपयोग से निपटने के लिए नए परिप्रेक्ष्य अथवा कार्यनीति तैयार नहीं हुई है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) शराब के संबंध में कहा जाता है कि पश्चिमी देशों में यह सभी समस्याओं की जड़ है। ऐसी कुछ अन्य समस्याओं के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) मादक द्रव्यों दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका के संबंध में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (30 शब्दों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) मादंक द्रव्य व्यापार संघ की खतरनाक गतिविधियों के संबंध में लिखिए (30 शब्दों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) वे कौन-से दो खतरनाक स्वास्थ्य संकट है जिनका सामना इंजेक्शन से मादक द्रव्य लेने वालों को करना पड़ता है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि कठोर दण्ड प्रावधानों से मादक द्रव्य समस्या समाप्त हो जाएगी? अपने विचारों के पक्ष में उदाहरण देकर सिद्ध करें (30 शब्दों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्षेत्रीय परिदृश्य

हमने पिछले भाग में मादक द्रव्य की वैश्विक समस्या के संबंध में एक झलक प्रस्तुत की है जो पूरे संसार में एक जैसी नहीं है, अर्थात् मादक द्रव्यों से संबंधित समस्याओं की प्रकृति विश्व के सभी क्षेत्रों में एक समान नहीं है। यह विभिन्न क्षेत्रों, राष्ट्रों और संस्कृतियों में अलग-अलग हो सकती है। हम इसे विभिन्न कोणों से देख सकते हैं। उदाहरण के लिए भारत जैसे देश में मादक द्रव्यों में शराब सबसे बड़ी समस्या है। भारत मादक द्रव्य उत्पादक देशों के बीच में फँसा हुआ है जिन्हें सुनहरा त्रिकोण (गोल्डन ट्रॉयंगेल) (म्यामार, लाओस, थाईलैण्ड) और गोल्डन क्रीसेंट (ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान) के नाम से जाना जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य तस्करी संचालन के क्षेत्र हैं। इसके अलावा भारत की पश्चिमी सीमाओं पर मादक द्रव्य तस्करी विभिन्न विध्वंसक गतिविधियों और आतंकवाद के लिए भी जिम्मेदार है। इसी तरह से सांस्कृतिक भिन्नताएँ भी मादक द्रव्य दुरुपयोग को भिन्न-भिन्न नजरों से देखती हैं। भारत में कुछ आदिवासियों के बीच गांजा पीना सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में स्वीकार किया हुआ है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में मेरीजूना का धूम्रपान (गांजा पीना) एक बड़ी समस्या है। इसके अलावा एक बहुत ही आश्चर्यजनक और दुख का विषय है कि बिट्रेन में कुछ लोग गांजा पीना कानून के दायरे में लाने की माँग कर रहे हैं यानि उनकी माँग है कि गांजा पीना अपराध न माना जाए। इसके पीने की छूट दी जाए।

मादक द्रव्यों का उपयोग मानव संस्कृति के समान ही पुराना है और प्रत्येक संस्कृति के अपने मादक द्रव्य होते हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर किया जाता है। विशेषकर विचार से जब कोई व्यक्ति अलौकिक शक्तियों से बात करना चाहता है। तीसरी दुनिया के देशों में मादक द्रव्यों का दुरुपयोग गरीबी से जुड़ा हुआ है। यह कुछ अच्छे संकेत हैं कि विकसित देशों में इस पर पाबंदियाँ लगाई जा रही हैं। वहीं पर इन द्रव्यों की माँग भी कम हो रही है। जहाँ तक अल्प विकसित देशों का प्रश्न हैं वहाँ कि स्थिति पहले ही भयंकर हो रही है, साथ ही इन मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से कुपोषण की समस्या और बढ़ गई है जो स्वास्थ्य देखभाल से जुड़ी हुई है। अल्प विकसित देशों में मादक द्रव्यों का प्रयोग देश के विकास में बाधा डाल रहा है और आर्थिक स्थिति को तेजी से विकृत कर रहा है।

कानून की स्थिति भी अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न है। भारत में भाँग या गांजा रखना अपराध है जबकि बिट्रेन में यह अपराध नहीं है। इससे पिछले भाग में बताया गया था कि अत्यधिक खतरनाक मादक द्रव्य रखने पर सिंगापुर में (500 ग्राम से अधिक गांजा रखने पर) फांसी की सजा दी जाती है। अनेक अल्प विकसित देशों में मादक द्रव्य व्यसनी और मादक द्रव्य कानून का उल्लंघन करने पर अन्य अपराधियों की तरह ही सजा दी जाती है। तीसरी दुनिया के अनेक देश गरीबी के कारण वहाँ के कानूनी तंत्र या शासन व्यसनियों का इलाज और उनके पुनर्वास की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए सिंगापुर को ही लीजिए। यहाँ पर मादक द्रव्य से संबंधित कानूनों को सख्ती से लागू किया जाता है। वहाँ कानून कड़े हैं किंतु इसके साथ ही वे मादक द्रव्य के व्यसनी का इलाज और उसके पुनर्वास का प्रबंध भी निश्चित रूप से करते हैं। इसके बाद मादक द्रव्य व्यसनी पर कड़ी नजर रखते है वहीं पर ड्रग्स कानून एवं रोकथाम के लिए संबंधित व्यक्ति को शिक्षित करने का जिम्मा भी उठाते हैं। मादक द्रव्य अपराधियों के लिए जेल में डालना, कौड़े लगाना, मृत्युदण्ड देना आदि संभव है। यदि कोई व्यक्ति चिकित्सा जाँच में मादक द्रव्य का व्यसनी पाया जाता है इसका इलाज किया जाता है और उसे 36 मास के लिए पुनर्वास करके उसकी सहायता की जाती है। पश्चिम के अनेक देशों में कानून का लागू करने वाले प्राधिकारी मादक द्रव्य व्यसनी के प्रति चिंताएँ जताते हैं। सरकार द्वारा घर पर या स्वास्थ्य केंद्र में व्यसनी का इलाज व पुनर्वास करते हैं साथ सुइयाँ परिवर्तन या बदलने के प्रायोजित कार्यक्रमों का संचालन करते हैं।

4.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग : भारतीय परिदृश्य

इस इकाई का पिछले भाग का अध्ययन करने के बाद आपके मस्तिष्क में कुछ प्रश्न उठेंगे। हमारे देश में क्या मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक बहुत बड़ी समस्या है? यदि ऐसा है तो वे कौन-से मादक द्रव्य हैं जिनका भारतीय लोग प्रायः इस्तेमाल करते हैं? क्या हमारी संस्कृति मादक द्रव्यों के प्रयोग की अनुमति देती है? क्या कोई प्रभावी रोकथाम या इलाज के उपाय मौजूद हैं? गैर-कानूनी मादक द्रव्य के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से हमारे राष्ट्र को क्या हानि होती है? इस कार्यक्रम के विद्यार्थी होने के कारण यह स्वाभाविक ही है कि आप इस तरह के सवाल करें। इस भाग में इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाएगा। हमें आशा है कि इस भाग का अध्ययन करने के बाद आप भारतीय मादक द्रव्य परिदृश्य और विश्व के परिदृश्य की तुलना करने में समर्थ होंगे। भारत के एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप मादक द्रव्य विनाश से निपटने के लिए कुछ कार्यनीतियों की योजना भी बनाएँगे।

आइए अब हम एक भारतीय युवक की सच्ची कहानी को पढ़ें जिसे शक्ति द्वारा प्रकाशित पुस्तक "दि साइकोटिक ड्रग मीनेस" में ब्रिगेडियर नजारत द्वारा लिखी उसकी पृष्ठभूमि में लिखा है।

रविन्द्र सिंह ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह का पुत्र था जिसने 1960 में माउट एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए अपने प्रथम भारतीय दल का नेतृत्व किया था। ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह की रुचि बाह्य जीवन में थी तथा जिसका संबंध युवकों को विकसित करने के लिए आजकल भी चल रहा है। उन्होंने संपूर्ण भारत में यूथ एडवेंचर क्लब के साथ नेशनल एडवेंचर फाउंडेशन को आरंभ किया था। रवि बहुत ही भाग्यशाली था जिसका जन्म एक अच्छे, स्वस्थ पारिवारिक वातावरण में हुआ जिसमें उसके माता-पिता सबसे श्रेष्ठ वस्तुएँ उसे उपलब्ध कराने का प्रयास करते थे।

रवि को बहुत अच्छे विद्यालय में भर्ती कराया गया। उसे अजमेर के मेयो कालेज के छात्रावास में रखा गया। यह कालेज पूर्ववर्ती राजकुमारों के लिए बनाया था। इसके प्राचार्य प्रतिष्ठित और शिक्षाविद जे.टी.एम. गिब्सन थे जो एक स्केटिंग और श्रेष्ठ पर्वतारोही थे। इसके साथ ही वे इन विद्यालय के प्रधानाचार्य भी रहे चुके थे। रवि स्वयं प्रतिभाशाली और सृजनात्मक प्रवृत्ति का योग्य विद्यार्थी था।

और तब भी ..... और अब भी ..... रवि साइकोट्राफ्क मादक द्रव्यों के जाल में फंस गया था। उसने किशोर अवस्था में बीड़ी पीना आरंभ कर दिया था जो उसे रात के अंधेरे में सड़कों पर पड़ी हुई मिल जाती थीं। इसके बाद उसने सिगरेट पीना आरंभ कर दिया क्योंकि वह स्वयं यह समझने लगा था कि वह अब बड़ा (जवान) हो गया है, साथ में यह भी सोचने लगा था कि सिगरेट पीने से वह स्मार्ट लगता है। इस समय तक वह नशे के मध्य घर में पहुँच चुका था और उसने भाँग पीना आरंभ कर दिया। नशे के लिए वह अपने साथियों के साथ कालेज की दीवार को फाँदने लगा था। जब उसकी माँ उससे मिलने के लिए स्कूल जाती तो वह अपनी माँ से कतराने लगा था। इसके बाद उसने अपनी चीजों को बेचना शुरू कर दिया और उस धन से वह भाँग खरीद कर पीने लगा। और जब वह अपनी कक्षा के अंतिम वर्ष में पहुँचा तो भाँग पीने के उस बिंदु पर पहुँच गया था जहाँ से वापस नहीं आया जा सकता। 11 वर्ष मेयो कालेज में बिताने के बाद उसे कालेज से निकाल दिया गया और उसका पतन आरंभ हो गया। वह ऐसे लोगों के साथ मिल गया जो व्यसनी और सनकी थे। अब वह अपना नशा पूरा करने के लिए फेरी लगाकर मार्फीन और हेरोइन जैसे महँगे मादक द्रव्य बेचने लगा था।

उसकी पहली बार "स्मैक (हेरोइन) का इंजेक्शन लिया और वह एक पक्का व्यसनी बन गया। अब वह भाँग नहीं पीना चाहता था। स्मैक पीने के कारण अब वह उस पर अत्यधिक निर्भर रहने लगा और इसकी पूर्ति के लिए चोरी करने लगा, फेरी लगाने के अतिरिक्त वेलियम, मैनड्रेक्स और अत्यधिक नशीले द्रव्यों को बेचने लगा था। वह हेरोइन की दुनिया में रहने लगा था साथ ही एल.एस.डी. का भी प्रयोग करने लगा। और पतन के गर्त में चला गया। इस स्थिति में पहुँचने के बाद उसने महसूस किया कि उसे अपना मार्ग बदल लेना चाहिए।

वह वापस अपने घर आया। उसके माता-पिता ने उसे फिर से अपना प्रेम तथा स्नेह दिया तथा उसको लम्बे समय तक चिकित्सकों की देख-रेख में रखा और उसका पुनर्वास किया गया। वह स्वयं ही सामाजिक कार्यों में शामिल हो गया। युवा लोगों के लाभ के लिए उसने व्यसनी जीवन के अनुभवों को प्रकाशित कराने का निश्चय किया और उसने (ओरिएंट पेपरबेक में) *आई वाज ए ड्रग एडिक्ट* नामक पुस्तक लिखी। यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रत्येक युवा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

अफसोस! वह अपनी पुस्तक पूरी न कर सका था और वह पुनः उस हृदय विदारक स्थिति में लौट गया। और उसकी बाकी बची पुस्तक उसके पिता ने पूरी की। रवि फिर से उस मादक द्रव्य के कीचड़ में फंस गया और उसने बहुत ही दुख भरे शब्दों में लिखा कि "मैं पुनः हेरोइन का व्यसनी हो गया हूँ और मेरा अनुमान है कि मैं उसमें मरने जा रहा हूँ"। रवि फिर हेरोइन की दुनिया में लौट गया। और मात्र 21 वर्ष की अल्प आयु में इस दुनिया से एक अच्छे जीवन का दुखद अंत हो गया।

यह सच्ची कहानी हमें बताती है कि भारत में कोई भी व्यक्ति इस फंदे में फंस सकता है। अब कहिए कि क्या भारत में मादक द्रव्य व्यसन वास्तविक समस्या है या नहीं?

भारत में तम्बाकू, शराब, गाँजा, कृत्रिम अफीम, कोकेन तथा निर्धारित मादक द्रव्य का दुरुपयोग होता है। संक्षेप में वे सभी मादक द्रव्य जो अन्य देशों में बनते हैं या मौजूद होते हैं वे सब भारत में आसानी से उपलब्ध होते हैं। परंतु यहाँ कुछ मादक द्रव्य अधिक प्रसिद्ध हैं और अन्य देशों की तुलना में अधिक स्वीकार किए जाते हैं या उनका प्रयोग किया जाता है।

भारत में तम्बाकू का प्रयोग आम बात है। इसका प्रयोग चबाने, धूम्रपान और नाक से सूंघने के लिए किया जाता है। तम्बाकू का प्रयोग परिवारों में भी स्वीकार्य है और निर्धन लोगों में

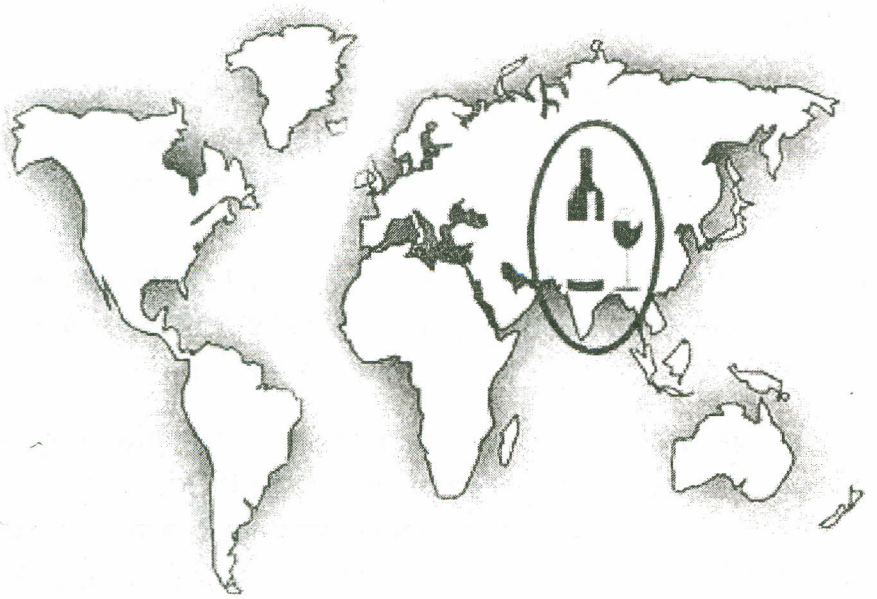

बहुत प्रचलित है। तम्बाकू चबाना और विशेषकर पान के साथ चबाना अधिकतर परिवारों में प्रचलित है। भारत में धूम्रपान करना काफी प्रसिद्ध है लोग बैठकर एक साथ "हुक्का" पीते हैं साथ ही उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में धूम्रपान करते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं। यहाँ सिगार का उत्पादन बहुत होता है जिसका निर्यात किया जाता है तथा इससे सरकार को काफी राजस्व प्राप्त होता है। यद्यपि पश्चिमी देशों में हम तम्बाकू सूंघते हुए आसानी से नहीं देख सकते हैं किंतु भारत में तम्बाकू को सूंघ कर प्रयोग करना भी काफी प्रचलित है।

भारत के लोगों में शराब अत्यधिक प्रचलित है। आज ताड़ी, फेनी और भारत में बनी अंग्रेजी शराब इस श्रेणी में आती हैं। प्रायः हम जहरीली शराब से मरने वालों की भयानक मौतों के समाचार अखबारों में पढ़ते रहते हैं। क्या आप जानते हैं यह क्या है? बहुत पहले की घटना है शायद आपको याद हो कि केरल के मध्य में वाईपीन नामक गाँव में ओणम त्यौहार के अवसर पर गैर-कानूनी शराब पीने के कारण एक पूरा गाँव ही मौत के गर्त में चला गया था। इस प्रकार की त्रासदी व दुखांत घटनाएँ क्यों होती हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि लोग तेज और सस्ती शराब की इतनी माँग करते हैं कि वे स्वयं शराब बनाने लगते हैं। यह शराब गैर-कानूनी तो होती ही है साथ में कभी-कभी यह शराब इतनी तेज हो जाती है कि वह विष का रूप धारण कर लेती है। यद्यपि गैर-कानूनी शराब बनाने पर रोक के लिए बहुत सख्त कानून हैं तो भी भारत में यह सबसे अधिक लाभ कमाने वाला घरेलू उद्योग है। इसका सबसे बुरा पहलू यह है कि इसके निर्माण और विक्रय में बच्चे एवं महिलाएँ भी हैं।

भारत में ताड़ी निकालना प्राचीन काल से चला आ रहा है। आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व तमिल के विद्वान कवि तिरुवल्लूवर ने ताड़ी न पीने के लिए दस दोहे लिखे थे। दक्षिण भारत में ताड़ी के वृक्ष से ताड़ी निकालना बहुत ही प्रचलित है। प्रायः धार्मिक अवसरों, त्यौहारों पर ताड़ी का जम कर प्रयोग किया जाता है।

ताड़ी गाँवों के लोग जीवन में बहुत ही प्रचलित है और कुछ राज्यों में वैध मादक द्रव्य है। कुछ राज्यों में तो यह सरकार द्वारा निर्मित, वितरित और परचून में बेची जाती है। आपने देखा होगा कि कुछ शराब की दुकानों के बोर्डों पर आई.एम.एफ.एल. रिटेल शाप लिखा होता है। क्या आप जानते हैं इसका पूरा अर्थ क्या है? आई.एम.एल.एफ. का अर्थ भारत में निर्मित विदेशी शराब। इसके अंतर्गत वे सभी शराब ब्रांड तैयार होते हैं जो विदेशों यानि कि विशेषकर पश्चिमी देशों में प्रसिद्ध एवं प्रचलित हैं किंतु इनका निर्माण भारत में ही होता है। बीयर, ब्रांडी, जिन, रम, वाइन, वोदका आदि इसी श्रेणी में आती है।

फेनी गोवा का बहुत ही प्रसिद्ध पेय है। इसकी बिक्री से सरकार को भरपूर राजस्व मिलता है और पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण है।

भारत में भाँग या गॉजा बहुत ही प्रसिद्ध है, यह एक गैर-कानूनी मादक द्रव्य है किंतु अत्यधिक प्रचलन में है। भाँग या गांजे की गैर-कानूनी खेती अत्यधिक मात्रा में होती है और देश से बाहर के देशों में इसकी तस्करी होती है। कुछ हिस्सा तो इसका स्थानीय लोगों द्वारा उपभोग कर लिया जाता है। उत्तर भारत के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में गांजे का प्रयोग उनके सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों का हिस्सा होता है। भारत में गाँजा युवाओं विशेषकर विद्यार्थियों में बहुत प्रचलित है। यह खेद का विषय है कि यहाँ इसके विरुद्ध आंदोलन की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना संयुक्त राज्य अमेरिका में।

कुछ अन्य अत्यंत खतरनाक मादक द्रव्य – कृत्रिम अफीम तथा कोकेन भारत के युवा वर्ग विशेषकर नगरों के नवयुवकों में इसके प्रति अत्यधिक आकर्षण है। आप 5 अप्रैल, 1999 के इंडिया टुडे के अंक के मुख पृष्ठ को देखिए जिस पर लिखा गया है "कोकेन जैसे नशीले और तेजाब जैसे तेज मादक द्रव्य शहरी युवा और अमीर लोगों में बहुत प्रचलित है इन्होंने

इस वर्ग में अपनी पकड़ जमा ली है।" हम प्रायः हेरोइन और ब्राउन शुगर की जब्ती के संबंध में समाचार-पत्रों में पढ़ते रहते हैं और अधिकतर ये तस्करी के समय ही जब्त होते हैं। इससे पिछली इकाई में हमने बताया था कि भारत मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का पारगमन बिंदु है। भारत के माध्यम से जब मादक द्रव्य की तस्करी होगी तो यह भी स्वाभाविक है कि इसका बहुत सारा हिस्सा यहॉ के स्थानीय बाजार में भी पहुँचता है और यहाँ के युवाओं को यह मादक द्रव्य आसानी से उपलब्ध हो जाएगा। इस भाग के आरंभ में हमने एक प्रश्न किया था कि "क्या हमारी संस्कृति मादक द्रव्य सेवन की अनुमति देती है?"

भारत के साथ मादक द्रव्य सांस्कृतिक रूप से जुड़े हुए हैं। जब हम इस ओर ध्यान देते हैं तो हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग और धर्म के बीच सीधा संबंध है। जब हम भारत की धार्मिक पुस्तकों को देखते हैं तो मादक द्रव्य के अनेक संदर्भ प्राप्त होते हैं। भारतीय वेदों में नशीले पदार्थों में पेय के लिए दो नाम हमारे समक्ष आते हैं सोम रस और सुरा, सोम रस देवता पीते थे और सुरा का प्रयोग मनुष्य करता था। इन दोनों में सुरा अधिक तेज थी परंतु सोम पीना आदरपूर्ण था।

सोम रस वैदिक यज्ञों में आहुति देने के काम आने लगा और उसे पुजारी लोग पीते थे। प्राचीन पुस्तकों में अध्ययन कर सकते हैं कि मनुष्य जब हर्षोन्माद की स्थिति में ईश्वर से मिलता था उस समय मद्यपान करना उसके लिए धार्मिक कृत्य होता था। पुजारी जिस समय उन्माद में होकर यानि मद्य सेवन करके समाधि लगाता था और ईश्वर के दर्शन करता था उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए उसे मादक द्रव्य आवश्यक रूप से सेवन करने होते थे। वात्स्यायन प्रसिद्ध कामसूत्र जिसमें स्त्री के साथ संभोग करने के 64 आसानों का विवरण दिया है और कहा गया है कि स्त्री सर्वश्रेष्ठ है जो "मादक द्रव्यों का निर्माण करने में निपुण हो तथा उनके उपयुक्त रसों का तत्व निकाल सके एवं उन्हें रंग दे सके " ताकि "वे अपने पति को अपने वश में रख सके।" इसलिए सांस्कृतिक रूप से भारतीय मादक द्रव्यों के सेवन और मदिरा पान से विमुख नहीं थे।

आज हमें एक अन्य प्रश्न पर विचार करना होगा। क्या भारत जैसा गरीब देश मादक द्रव्य पर इतना धन व्यर्थ में खर्च कर सकता है? आशा है अब आपका एक समझदार व्यक्ति की तरह इस प्रश्न का उत्तर होगा "नहीं"। भारत में मादक द्रव्य के दुरुपयोग का सीधा संबंध गरीबी और महिलाओं के उत्पीड़न से जुड़ा है। भारत में मनुष्य विशेषकर समाज के निम्न स्तर से संबधित व्यक्ति सारा दिन रोटी के एक टुकड़े के लिए संघर्ष करता रहता है। अधिकतर भारतीय गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करते हैं। भारत में निर्धन व्यक्ति को गंदी बस्तियों में बने घरों में समुचित स्वस्थ वातावरण के अभाव के कारण अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मादक द्रव्य लेने के बाद तो उसकी स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हो जाती है। इसके अतिरिक्त नशे में धुत व्यक्ति प्रायः अपनी स्त्री को ही मारता है इससे वह कुछ संतुष्टि भी महसूस करता है। महिलाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से तंग किया जाता है उन पर अत्याचार किए जाते हैं इसलिए घरेलू हिंसा का मूल कारण मादक द्रव्य व्यसन है।

भारत में गरीबी और मद्यपान के बीच गहरा संबंध है जो एक वास्तविक तथ्य है। गरीब आदमी के दुखों और कष्टों का मुख्य केंद्र शराब है। प्रायः देखा जाता है कि भारत के गरीबों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी मेहनत की कमाई को शराब पीकर नष्ट कर देता है। भारत का गरीब आदमी गंदी बस्तियों में अपना जीवन बिताता है जहाँ पर उसकी मूल आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होती हैं – जैसे कि, रोटी, कपड़ा और मकान। इस स्थिति में जब एक गरीब व्यक्ति शराब का सेवन करता है तो इसका अर्थ होता है कि वह अन्य मूल आवश्यकताओं – स्वास्थ्य और बच्चों की शिक्षा आदि के खर्च में कटौती करके शराब पीता है। 1995 में पेरिस में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पेरिस में एक सम्मेलन में अखिल भारतीय

आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के प्रो. शेखर सक्सेना ने कहा था कि "प्रत्येक गरीब आदमी शराब नहीं पीता है, परंतु यदि वह पीता है तो वह धन भोजन और बच्चों की शिक्षा पर किए जाने वाले खर्च में कटौती करके आता है। किसी व्यक्ति द्वारा लगातार शराब का प्रयोग करने का अर्थ होता है – कुपोषण, बच्चों का विद्यालयों से निकाला जाना और परिवार में गरीबी का अनैतिक चक्र, हिंसा एवं रोगों का आक्रमण। प्रो. सक्सेना के बयान को भारतीय समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी के रूप में लिया जाना चाहिए। यह कथन सत्य है कि वास्तव में गरीबी से छुटकारा पाना बहुत कठिन है जब तक व्यसन से लड़ने के लिए सही आवाज नहीं उठाई जाएगी। इसलिए गांधीजी ने कहा है कि "छुआछूत जैसी भयंकर प्रथा के बाद शराब की भयंकरता ही सामने आती है।"

क्या भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए समुचित कानूनी व्यवस्था है? अपराधियों को क्या सजा दी जाती है? समूचे भारत में नशाबंदी क्यों नहीं की जाती है? किस प्रकार से कानून को लागू करने वाले प्राधिकारी मादक द्रव्य के गैर-कानूनी व्यापार को रोकने का प्रयास करते हैं अथवा उनकी क्या भूमिका है? इस तरह के प्रश्न हैं जिन्हें अब आप उठा सकते हौ। भारत में इस तरह के प्रतिबंधों का अधिकार राज्यों के पास है। भारतीय अपराध संहिता मादक द्रव्य दुरुपयोग से निपटने के लिए समुचित कानूनी व्यवस्था है। गैर-कानूनी शराब या अन्य मादक द्रव्यों का निर्माण, उसका अवैध व्यापार व इस प्रकार के मादक द्रव्य आदि दण्डनीय हैं जिसके लिए कैद और जुर्माना दोनों साथ-साथ हो सकते हैं। यह सब अपराध की प्रकृति और गंभीरता पर निर्भर करता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि नशा करना अत्यंत भयंकर है और यह गरीब आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है। परंतु यह भी हास्यास्पद है कि अधिकतर भारतीय राज्यों में नशाबंदी नही है। इसके अलावा राज्य सरकारों का शराब निर्माण और उसके वितरण पर एकाधिकार है। यह निर्णय राज्य सरकार को लेना होगा कि राज्य में किस प्रकार की शराब का विक्रय किया जाए।

सरकार के पास नशाबंदी न करने के लिए कुछ तर्क हैं। एक कारण तो यह बताया जाता है कि शराब से राज्य को अत्यधिक राजस्व प्राप्त होता है। शराब पर लगे कर से और शराब बिक्री के लिए दुकानों की नीलामी से सरकार को समुचित धन प्राप्त होता है। इन सब कारणों के लिए एक प्रश्न किया जा सकता है कि नशाबंदी लागू किए जाने पर कितना राजस्व का घाटा होता है और इस वित्तीय घाटे को किस प्रकार पूरा किया जा सकता है उस धन की कितनी राशि होगी? आप इस तथ्य के बारे में जानते होंगे कि अभी पिछले दिनों में आन्ध्र प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू कर दी गई थी यह एक प्रयोग था जिसके बारे में नशाबंदी को हटा लिया गया था। सरकार एक तर्क और भी देती है कि जिसे वह प्रायः देती रहती है। उसका कहना है कि देश में भयंकर बेरोजगारी है और इसलिए शराब का निर्माण, वितरण और उसके विक्रय में भयंकर बेरोजगारी है और इसलिए शराब का निर्माण, वितरण और उसके विक्रय से बहुत सारे लोगों को रोजगार मिलता है जो अत्यंत आवश्यक है। यदि शराब के कारखानों को एक दम बंद कर दिया जाए तो उन लोगों को पुनर्वास कौन करेगा जो शराब बन्दी के कारण बेरोजगार होंगे। एक सबसे बड़ा पाठ हम समय-समय पर सीखते रहते हैं कि जब खुले बाजार में शराब बेचने पर पाबंदी लगा दी जाती है उस समय गैर-कानूनी शराब का निर्माण होने लगता है और वह कभी-कभी इतनी भयंकर हो जाती है कि उससे सैंकड़ों लोगों की जाने चली जाती हैं। इस तरह की त्रासदी हर वर्ष होती रहती है। सभी कहते हैं और हम इसे महसूस भी करते हैं कि भारत में शराब और ड्रग्स पर अत्यधिक धन बर्बाद किया जाता है जिसका हिसाब नहीं है।

आज भारतीय युवक सभी तरह के भयंकर मादक द्रव्य के आदी हो गए हैं। गाँजे का धूम्रपान करना साधारण बात हो गई है तथा ब्राउन शुगर और हेरोइन यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती है। कोकेन पहले भारत में नहीं मिलती थी किंतु अब महानगरों में मिलने लगी है। इसलिए वह कौन-सी सबसे अच्छी नीति हो सकती है जिसका सुझाव हम भारतीय

नवयुवकों को दे सकते हैं। हमारा सुझाव है कि सब लोग आत्मसंयम और सदाचार को पूरी तरह से अपनाएँ और आने वाली नई पीढ़ी को यह सिखाएँ कि वह कहें ड्रग्स का प्रयोग नहीं करेंगे।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) क्या आप मादक द्रव्य के गैर-कानूनी व्यापार के लिए सिंगापुर में दिए जाने वाले दण्डों के प्रकारों से सहमत हैं? पुष्टि के लिए कारण बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में पाई जाने वाले कुछ सामान्य मादक द्रव्यों की सूची बनाएँ

.....

.....

.....

.....

.....

3) आप किस प्रकार से मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध लड़ेंगे? (अपना उत्तर 25 शब्दों में दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

यह इकाई एक यात्रा की तरह थी, इसके माध्यम से विश्व के विभिन्न हिस्सों की स्थिति को समझने का अवसर प्राप्त हुआ है कि मादक द्रव्य कितने भयानक और जोखिम भरे होते हैं। आपने यह भी अनुभव किया होगा कि विश्व का कोई भी एक हिस्सा नहीं है जहाँ पर यह सामाजिक समस्या न हो। आप यह भी समझ गए होंगे कि मादक द्रव्य पर प्रतिबंध लगाने के लिए विभिन्न देशों ने अलग-अलग उपाय किए हुए हैं। परंतु इन सबके बावजूद

मादक द्रव्यों का दुरुपयोग लगातार चल रहा है। क्या आप यह महसूस नहीं करते हैं कि भारत जैसे विकासशील देश मादक द्रव्य के दुरुपयोग के भार को सहन करने में असमर्थ हैं। इसलिए हमें चाहिए कि मादक द्रव्य के निर्माण, वितरण और इसके दुरुपयोग के विरुद्ध युद्ध स्तर पर कार्य करें जिससे इस व्यसन से विशेषकर नवयुवकों को बचाया जा सके। क्या आप यह विचार नहीं करते है कि इस इकाई के भाग 4.4 में प्रो. शेखर सक्सेना का कथन पाठकों का हृदय में गुंजायमान नहीं होता? हमारा विश्वास है कि जब आप इस पूरे कार्यक्रम का अध्ययन कर लेंगे तब तक आप मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार हो जाएँगे।

4.6 शब्दावली

मादक द्रव्य व्यापारियों का संगठन : मादक द्रव्य निर्माणकर्ता/तस्कर अपने हितों को साधने और लाभ कमाने के उद्देश्य से संगठन का निर्माण कर लेते हैं।

खर्राटे लेना : सोते समय नाक से जोर-जोर से सांस लेना। इससे भयंकर ध्वनि निकलती है।

विनाशक : लोगों के हितों को कमजोर करके उनको नष्ट या विनाश कर देना, उदाहरण के लिए जिस प्रकार से सरकार गिरा देना है।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनिल अग्रवाल (1995), *नारकोटिक ड्रग्स*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

थॉमस ग्रेशियस (1997), *प्रीवेंशन ऑफ एड्स: इन सर्च ऑफ एंसवर्स*, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

लैरी सियगल (इडी, 1987), *एड्स एंड सब्सटेंस अब्यूज*, हैसिंगटन पार्क प्रेस, न्यूयार्क।

यू एन डी सी पी (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट*, यू एन डी पी सी पी रिजनल ऑफिस, नई दिल्ली।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) अनेक समस्याएँ हैं – सड़क, दुर्घटनाएँ, औद्योगिक दुर्घटनाएँ, परिवारों में दरारें, अकाल मृत्यु, एच आई वी का संचरण, यकृत शोथ-सी ये कुछ नाम हैं। सूची में शामिल करें।

2) राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन की चिंताओं को दर्शाना – वे किस प्रकार से इसकी रोकथाम, इलाज और पुनर्वास के लिए कार्य कर रहे हैं।

3) गैर-कानूनी मादक द्रव्य के व्यापारी समूह बहुत शक्तिशाली हैं वे सरकारों को अस्थिर कर देते हैं और आतंकवादी गतिविधियों को धन उपलब्ध कराते हैं। उनका तस्करों से निकट का संबंध होता है। इस विचार को विस्तार से लिखें।

4) एच आई वी संक्रमण और यकृत शोथ-सी - इसे विस्तार से लिखें।

5) भारत के साथ सिंगापुर के मादक द्रव्य परिदृश्य की तुलना कीजिए। पूछिए कि क्या कड़ी सजा देने पर मादक द्रव्य दुरुपयोग को समाप्त किया जा सकता है।

बोध प्रश्न II

1) सिंगापुर और भारत जैसे दो देशों में मादक द्रव्य के गैर-कानूनी व्यापार पर कानूनी निहितार्थ के विरोधाभासों की तुलना कीजिए। पूछिए कि किसी व्यक्तिगत सहायता से और कानूनी दण्डों के प्रावधानों से ड्रग्स के अवैध व्यापार पर पूरी तरह से पाबंदी लगाई जा सकती है।

2) इस इकाई में लम्बी सूची है। यदि आप इसे बना सकते हैं तो अच्छा रहेगा।

3) कल्पना कीजिए कि आप एक सामाजिक कार्यकर्ता होना चाहते हैं आप अपनी कार्य योजना बताएँ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

MPDD/IGNOU/P.O.1.5T/October 2009 (Reprint)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ISBN-978-81-266-3262-6